और "नैहाङ्गी"के अङ्गरेजी अनुवाद होके आधारपर इस पुस्तक-
की ऐतिहासिक बातें लिखी गई हैं। जापान-वृत्तान्त आरम्भ
करनेसे पहले हम वर्त्तमान रूस-जापान युद्धका कारण और
युद्धका विवरण संक्षेपसे प्रकाश करते हैं।

युद्धका कारण।

जापानद्वीप समूहके मुकाबले कोरिया नामक प्रायद्वीप
है। एक सङ्कीर्ण प्रणालीने कोरिया और जापानको अलग
कर दिया है। सैकड़ों वर्षसे जापान कोरियापर अपना प्रभुत्व
चिरकालके लिये स्थापित करनेकी चेष्टा कर रहा है। जापान-
सरकारको निश्चय हो गया है, कि कोरियापर प्रभुत्व रखने
होसे जापान निरापद रह सकता है। कोरियापर प्रभुत्व
स्थापन करनेके लिये ही सन् १८९५ ई०में जापानने चीनसे युद्ध
किया था। जापान जीता, चीन हारा था। चीनने कोरियापर
जापानकी प्रभुता स्वीकार की और जापानको आर्थर-बन्दरक
तथा लियाटुङ्ग नामक आर्थर-बन्दर-प्रदेशका भी नामक [illegible]
दिया था। रूसने चीनकी इस सन्धिपर आपत्ति की। जर्मनी
और फ्रांसने भी रूसका साथ दिया। जापान चीनसे लड़कर
थक गया था। इस कारण वह इन तीन महाशक्तियोंसे कुछ
कर न सका,—चुप [illegible] रह गया। जापानको आर्थर-
बन्दर और लियाटुङ्ग प्रदेश चीनको दे देना पड़ा। जापानकी
कोरियापर प्रभुता करनेकी इच्छा [illegible] नहीं, किन्तु रूस
[illegible] आशा [illegible]
[illegible]

वष्ठकतक अपना बहुत लम्बा साइबेरियन रेलपथ तय्यार कर लिया। शरत् ऋतुमें ब्लाडीवष्टक-बन्दरके पार्श्ववर्त्ती समुद्रका जल जमकर बरफ बन जानेकी दिक्कतसे रूसको एक तुषाररहित बन्दरकी जरूरत हुई। रूसको अरथर-बन्दर ही उपयुक्त बन्दर दिखाई दिया! उसने कुछ महीने पहले जिस बन्दरसे जापानको निकाल दिया था, उसी बन्दरको चीनसे कह सुनकर अपने कब्जेमें कर लिया। जापान लाल लाल आंखोंसे रूसको देखता रह गया—कुछ कर न सका। सन् १८९९ ई०में चीनका बाक्सर-विभ्राट् हुआ। संसारकी अनेक शक्तियोंने बाक्सर-विभ्राट मिटानेके लिये अपनी अपनी फौजें चीनमें भेजीं। जापानने भी अपनी फौज भेजी। बाक्सर-विभ्राट् मिटनेपर भिन्न भिन्न शक्तियोंने चीनके जिन शहरों वा देशोंपर दखल जमा लिया था उन्हें चीनको वापस कर दिया। मञ्चूरियापर दखल जमाये हुए रूसने अन्यान्य शक्तियोंकी तरह अपना मकबूज देश खाली कर देनेके लिये कहा सही, किन्तु खाली करनेके समय खाली नहीं किया। खाली करनेके बदले बहाने करने लगा। चीनको, आज—कलपर टालने लगा।

रूस मञ्चूरिया खाली नहीं किया चाहता था। वह दिन दिन उसमें गढ़बन्दियां करता जाता था। ब्लाडी-वष्टकसे लेकर अरथर बन्दरतकके देशको रूसने निगल जानेका संकल्प कर लिया। जापानने देखा, कि हमारी स्थितिमें बाधा पड़ना चाहती है। रूसने जिस तरह जबरदस्त हाथ लपकाकर बालटिक-सागरसे पासिफिक-समुद्रपर्य्यन्त अपना अधिकार कर लिया है, उसी तरह वह अब मञ्चूरिया, कोरिया प्रभृति

देशोंपर भी अपना अधिकार जमाया चाहता है। कुछ महीने बीते जापान और इङ्गलैण्डमें एक सन्धि हुई। इस सन्धिद्वारा इङ्गलैण्डने जापानसे प्रतिज्ञा कर ली कि यदि तुम कभी रूसके साथ युद्ध करनेमें प्रवृत्त होगे, तो मैं दूसरी शक्तिको रूसका पक्ष न ग्रहण करने दूंगा। इङ्गलैण्डकी मैत्रीसे जापान अन्यान्य शक्तियोंकी ओरसे निश्चिन्त हुआ। अब वह रूससे मञ्चूरिया खाली करने और कोरियामें प्रचार न फैलानेके लिये बारम्बार कहने लगा। रूस जापानसे भी मञ्चूरिया खाली करनेके वादे करने लगा। किन्तु भीतर भीतर वह मञ्चूरियामें और जमकर बैठने लगा। इस प्रकार सन् १९०३ ई० की ६ ठीं जूनतक रूस और जापानमें मञ्चूरिया खाली करनेके बारेमें बातचीत चलती रही। जापानने अन्तमें खिजलाकर वर्तमान सन्की १३ वीं जनवरीको रूसको लिख भेजा कि यदि तुम शीघ्र मञ्चूरिया न खाली करोगे, तो मैं बलपूर्वक तुम्हें मञ्चू-रियासे बाहर निकाल दूंगा। रूसने इस बातका प्रत्यक्षमें कोई जवाब नहीं दिया, किन्तु यथार्थमें प्रत्युत्तरस्वरूप अपनी बहुत बड़ी फौज कोरिया और मञ्चूरियाकी सरहद्दों [illegible] [illegible] भेज दी। जापानने देखा, कि रूस उसको कुचल ही डालना चाहता है—अधिक विलम्ब करनेसे उसका नाश सम-म्भावी है। जापानने रूससे युद्ध करना ही एक मात्र उपाय देखा और वर्तमान सन्की ८ वीं फरवरीको [illegible] रूसके पोर्ट-आर्थरवाले जङ्गी जहाजोंपर आक्रमण करके [illegible] [illegible] युद्ध आरम्भ कर दिया। आज प्रायः ६ महीनेसे यह रूस-जापान युद्ध चल रहा है।

जल-युद्धका विवरण।

रूसके जङ्गी जहाजोंका जबरदस्त बेड़ा आरथर-बन्दरमें मौजूद था। मञ्चूरियाके रूसी बड़ेलाट अलकसिफ इस जहाजी बेड़ेके प्रधान अफसर थे। युद्ध आरम्भ होते ही

बड़ेलाट अलक्सीफ।

वह आरथर-बन्दरसे भागकर अन्तरस्थ मञ्चूरियामें चले गये। रूसके नौसेनापति एडमिरल मेकराफ आरथर-बन्दरस्थ जङ्गी जहाजोंके नौसेनापति बनाये गये। वे समय समयपर आरथर-बन्दरसे बाहर निकलकर जापानी जङ्गी जहाजोंके बेड़ेसे मुकाबला करने लगे। जापानी जङ्गी जहाजोंके नौ-

टोगो। जापानके नौसेनापति।

सेनापति हैं टोगो। टोगो अनुभवी हैं—धीर गम्भीर हैं। उन्होंने अपने पुराने जहाज आरथर-बन्दरमें डुबाकर बन्दरका मुहाना बन्द करने और बन्दरमें रूसी जङ्गी जहाजोंके बन्दरसे निकलनेकी राह रोकदेनेकी बारम्बार चेष्टा की। किन्तु वे कृतकार्य्य न हुए। गत १३ वीं अप्रेलको मेकराफ अपने कई जङ्गी जहाजोंसहित आरथर-बन्दरसे निकले। [illegible]

जापानी जङ्गी जहाजोंसे मुकाबला हुआ। रूसी जङ्गी जहाज परास्त हो कर अरथर-बन्दरकी ओर भागे। पेट्रोपावलस्की नामक बहुत बड़े जङ्गी जहाजपर रूस-नौ-सेनापति मेकराफ सवार थे। अरथर-बन्दरकी ओर भागनेके समय पेट्रोपावलस्की जहाज एक जलमग्न आग्नेय-अस्त्रद्वारा टकराया और २। ३ मिनटोंमें

मेकराफ। रूसके नौ सेनापति।

मेकराफसहित डूब गया। इसके उपरान्त विटेगिफ्ट रूसी जङ्गी जहाजोंके नौ-सेनापति हुए। विटेगिफ्टने गत १० वीं अगस्तको अरथर-बन्दरके कुल जङ्गी जहाजोंसहित अरथर-बन्दरसे निकल कर व्लाडीवस्टककी ओर भाग जानेकी चेष्टा की। एडमिरल टोगोने रूसी जहाजोंको घेर लिया। रूस-

जापानके जङ्गी जहाजोंमें खूब लड़ाई हुई। अन्तमें विटेगिफ्ट मारे गये। रूसी जङ्गी जहाज भागे। कुछ जहाज भागकर चीन-प्रदेशस्थ अङ्गरेजोंके और जर्मनोंके बन्दरगाहमें चले गये। थोड़ेसे जहाज बहुत बुरी दशामें आरथर-बन्दरमें लौट गये। आरथर-बन्दरके जङ्गी जहाज इस समय निकम्मे हैं। वे जापानी जङ्गी जहाजोंके भयसे आरथर-बन्दरसे बाहर नहीं निकल सकते। इस प्रकार रूसके आरथर-बन्दरवाले जङ्गी जहाजोंका प्रायः सर्वनाश हो चुका है। आरथर-बन्दर भी जापानी फौजों-द्वारा घिरा हुआ है। प्रतिदिन उसके पतनसमाचारकी प्रतीक्षा की जाती है। इसके अतिरिक्त रूसके ब्लाडीवोस्टकके कुछ जङ्गी जहाज भी जापानी जङ्गी जहाजोंद्वारा परास्त होकर ब्लाडीवोस्टकमें छुपे हुए हैं। इस समय समुद्रपर जापानका पूरा आधिपत्य है। रूसकी समुद्रपरकी शक्ति एक तरहसे बिल्कुल नष्ट हो चुकी है।

स्थलयुद्धका विवरण।

हाथ लगीं। स्वदेश विदेशमें रूसका मान सम्भ्रम नष्ट हुआ।

रूस-जापानका दूसरा भीषण युद्ध हुआ किन्चाउ और नानसन पर्व्वतमें। जापान-सेनापति ओकूने प्रायः ३५ हजार सिपाहियोंकी जमाअतसे इस पर्व्वतपर आक्रमण किया। रूससेनापति छोसल सिर्फ १० हजार सिपाहियोंकी फौजसे इस स्थानकी रक्षाके लिये तय्यार हुए। भीषण लड़ाईके बाद छोसल किन्चाउसे भाग गये,—साथ साथ डालनी-बन्दरका पतन हुआ और अरथर-बन्दर स्थलकी ओरसे भी पूर्ण रूपसे अवरुद्ध हो गया।

तीसरा भीषण युद्ध,—वाफाङ्गको नगरमें हुआ। प्रायः ५० हजार रूसी सिपाही जेनरलष्टाकलबर्गकी अधीनतामें अरथर-बन्दरका उद्धार करनेके लिये दक्षिणाभिमुख जा रहे थे। जापान-सेनापति ओकूने १ लाख सिपाहियोंकी जमाअतसे इस फौजका सामना किया। इस जगह भी रूसी फौजको सम्पूर्ण-रूपसे विध्वस्त पराजित और अङ्गभङ्ग होना पड़ा।

चौथी मारकेकी लड़ाई हुई केइपिङ्ग नगरमें। गत ६ठीं जुलाईको यह युद्ध आरम्भ हुआ और ८वीं जुलाईको समाप्त। इस लड़ाईमें जापान-सेनापति ओकूके अधीन ५० हजार सिपाही और ३।४ हजार सवार थे। उधर रूसके प्रधान सेनापति कूरोपाटकिनके अधीन २२ हजार सिपाही थे। चार दिनोंतक अविरत युद्ध करके वीरत्व और रणकौशल दिखाकर जापान-सेनापति ओकू गत ८वीं जुलाईको सन्ध्यातक केइपिङ्गपर पूर्णरूपसे अधिकृत हो गये! रूसी फौजोंको शिकस्त फाश नसीब हुई।

हजार सिपाही और १ सौ तोपें जेनरल छाकलवर्गके अधीन थीं। जापान-सेनापति उक्त बहुसंख्यक सिपाहियोंसहित रूसी फौजपर आक्रमण कर रहे थे। घोर युद्धके उपरान्त, सहस्र सहस्र सिपाहियोंके मरनेके उपरान्त, रूस-सेनापति छाकलवर्ग अपनी फौजसहित भागे। जापानी फौजोंने ताशी-चियावपर कबजा कर लिया।

इसके उपरान्त सातवीं लड़ाई और सबसे बड़ी लड़ाई हुई लियावयाङ्ग नगरमें। इस युद्धमें जापानकी ओर प्राय: साढ़े तीन लाख सिपाही और रूसकी ओर प्राय: ढाई लाख सिपाही थे। रूसकी ओर प्राय: ५ सौ तोपें थीं और जापानकी ओर ८ सौ। इस लड़ाईमें ६ लाखसे ऊपर ऊपर सिपाही युद्धमें प्रवृत्त हुए थे। इसी लड़ाईमें कालरूपिणी, खड्ग धारिणी काली, शोणितसिक्त रक्तवर्ण वदन व्यादानपूर्व्वक मानो पृथिवी ग्रास करनेपर उद्यत हुई थीं। उनकी लहलहाती लाल जिह्वा धारदार लाल दन्तपंक्ति, अग्नि स्फुलिङ्गमयी लाल असि, कोटि सूर्य्य समप्रभ लाल दिनेत्र देखकर संसार स्तम्भित बना था। इस युद्धमें जापानकी ओर थे, जापानके प्रधान सेनापति फील्डमार्शल ओयामा—रूसकी ओर थे रूसके प्रधान सेनापति कुरोपाटकिन। कई दिनोंकी लड़ाईके उपरान्त गत १ ली सितम्बरको रूसी फौजें हारकर मकदन नगरकी ओर भागी। जापानी फौजोंने लियावयाङ्ग नगरपर कबजा कर लिया।

इसके उपरान्त आजकल ८ वीं बड़ी लड़ाई आरम्भ हो गई है मकदनमें। मकदननगरको जापानियोंने तीन ओरसे वेष्टित कर लिया है। दोनो ओरके मिलाकर प्राय: ६।७ लाख

सिपाही युद्धमें प्रवृत्त हुए हैं। खड्गयुद्ध आरम्भ हो गया है। अभीतक फैसलेकी लड़ाई नहीं हुई है।

रूस-जापानने युद्धकी ऐसी ही वर्तमान दशा है। रूस इतने दिनोंसे जापानको तुच्छ समझता आ रहा था। रूस कहता था, कि असभ्य जापान लड़ना क्या जाने। किन्तु जापानकी कार्यावली देखकर अब रूसकी आंखें खुल गई हैं— संसारकी आखें खुल गई हैं। क्षुद्रकाय जापानियोंने दिखा दिया है, कि हम असभ्य होनेपर भी वैज्ञानिक सुसभ्य हैं। सुसभ्यताके साथ उनकी उच्चताका अपूर्व बल भी संयुक्त हो गया है। इस महाबलके सामने समस्त पृथिवी अवनत हुई है। जब उच्चतामें मधुरता मिलती है,—जब सूर्य और चन्द्र एकत्र होते हैं,—जब वज्रके साथ सुधाका सम्मिलन होता है, उस समय वह अपूर्वत्वको प्राप्त होता है। सो जापानने अपूर्वत्वके सर्वोत्तम गुणसे संसारको मुग्ध किया है। ऐसे ही जापानका वृत्तान्त अब "जापान वृत्तान्त" में देखिये।

कलकत्ता।
२री अक्टोबर, सन् १९०४ ई०।

जापानके सम्राटों और सम्राज्ञियोंकी फिहरिस्त।
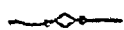
नं०	नाम	राज्याभिषेक	सन्	मृत्यु	सन्
१	जिम्मू	ईसाके जन्मके पूर्व	६६०	यथा	५८५
२	सुइजी	यथा	५८१	यथा	५४९
३	अन्नी	यथा	५४८	यथा	५११
४	इटोकू	यथा	५१०	यथा	४७७
५	कोशो	यथा	४७५	यथा	३९३
६	कोआन	यथा	३९२	यथा	२९१
७	कोरी	यथा	२९०	यथा	२१५
८	कोगेन	यथा	२१४	यथा	१५१
९	कैकवा	यथा	१५७	यथा	९८
१०	सुजिन	यथा	९७	यथा	३०
११	सुइनिन	यथा	२९	ईसाके जन्मोपरान्त	७०
१२	कैइको	ईसाके जन्मोपरान्त	७१	...	१३०
१३	सैमू	...	१३१	...	१८०
१४	चुआई	...	१९२	...	२००
	महारानी जिङ्गो		२०१	...	२६९
१६	ओजिन	...	२९०	...	३१०
१७	निनतोकू	...	३१३	...	३९९

सं०	नाम		सन्		सन्
८६	गोहोरीकावा	..	१२२१	...	१२३४
८७	योजो	.	१२३२	.	१२४२
८८	गोसागा	..	१२४२	.	१२७२
८९	गोफुकाकुसा	...	१२४६	..	१३०४
९०	कामेयामा	.	१२५९	.	१३०५
९१	गोउदा	...	१२७४	..	१३२४
९२	फुशिमी	...	१२८८	..	१३१७
९३	गोफुशिमी	...	१२९८	.	१३३६
९४	गोनिजियो	...	१३०१	...	१३०८
९५	हानाजोनो	...	१३०८	...	१३४८
९६	गोडायगो	...	१३१८	...	१३३९
९७	गोमुराकामी	...	१३३९	...	१३६८
९८	गोकामेयामा	...	१३७३	...	१४२४
९९	गोकोमत्सू	...	१३८२	...	१४३३
१००	शोको	...	१४१४	...	१४२८
१०१	गोहानाजोनो	..	१४२९	...	१४७०
१०२	गोत्सुचीनेकाडो		१४६५	...	१५००
१०३	गोकाशीवाबारा		१५२१	...	१५२६
१०४	गोनारा	...	१५३६	...	१५५७
१०५	ओगीमाची		१५६०	...	१५९३
१०६	गोयोजो	.	१५८६	..	१६१७
१०७	गोमिजुनो	...	१६११	..	१६८०
१०८	मन्नाशी मियोशो		१६३०	...	१६९६

जापान-वृत्तान्त।

प्रथम परिच्छेद।

भारत, जापानको बहुत दिनोंसे जानता है। एकबार भारतके बौद्धनरपति महाराज अशोकका शासनकाल याद कीजिये। ईसामसीहकी उत्पत्तिसे प्राय. ढाई सौ वर्ष पहले नरपति अशोकने बुद्धधर्म्म प्रचारके लिये चीन, कोरिया और जापान प्रभृति देशोंमें बौद्ध-धर्म्मोपदेशकोंके दल भेजे थे। ऐसे ही धर्म्मोपदेश-कोंके दलने जापानमें बौद्धधर्म्मका प्रचार किया और ऐसे ही दलने जापानसे भारतमें लौटकर जापानका सविस्तर विवरण प्रकाश किया था। इतिहाससे वाकफीयत रखनेवाले पाठक जानते होंगे, कि मारको पोलो नामक पुरतगाली ही पहला

युरोपवासी भारतमें आया था और इसी मारको पोलोने जापानका हाल पहले पहल युरोपमें प्रकाश किया था। मारको पोलो अपनी 'वेनिसियन' नाम्नी पुस्तकके २३५ वें पृष्ठमें लिखता है,—"सन् १२८५ ई० में चीनराज्यमें मुझको जापानका हाल मालूम हुआ। चीनियोंने बताया, कि चीनकी पूर्व ओर अगाध जलनिधिके बीचमें चियाङ्गु नामक एक टापू अवस्थित है। वह बहुत बड़ा और हरा भरा टापू भूखण्डसे ७॥ सौ कोसके फासलेपर है। टापूके रहनेवाले श्वेतकाय और सुशिक्षित हैं। वे मूर्ति-पूजक और स्वतन्त्र हैं। उनके टापूमें सुवर्ण उत्पन्न होता है, इसलिये उनके टापूपर बहुत बड़ा सुवर्ण-भाण्डार है।" चीनमें जापान पहले चीपान्,—इसके उपरान्त जी-पिन-क्वे नामसे प्रसिद्ध हुआ और अब अंग्रेज इसको जापानके नामसे पुकारते हैं। उधर जापानवासी अपने राज्यको नि-पिन कहते हैं।

जापान राज्य वा नि-पिन कहलानेवाला दीप समूह पासिफिक महासागरके पूर्वोत्तर भागमें है। [illegible]-पर्वतोंकी [illegible] उत्तर [illegible] देशके [illegible] प्रान्तोंके बारह [illegible]

फ़ारमोसा द्वीपपर्य्यन्त चली गई है। जापानका द्वीपसमूह इसी खण्डित शृङ्खलाका आंशिक भाग है। जापान-द्वीपसमूहका प्रसार एशिया भूखण्डकी समानरेखामें उत्तरपूर्व्वके कोनेसे लेकर दक्षिण पश्चिमके कोनेतक है। येज्जो टापू जापान-द्वीपसमूहकी उत्तरीय सीमा है और क्यूशू टापू दक्षिणीय। येज्जो टापूकी उत्तरीय सीमाकी अक्षरेखा ४५ डिगरी २५ मिनिट है और क्यूशू टापूकी दक्षिणीय सीमाकी अक्ष-रेखा ३१ डिगरी है। आगे येज्जोकी पूर्व्वीय सीमाकी द्राघिमा १४६ डिगरी १७ मिनिट है और क्यूशू टापूके पश्चिमीय सीमाकी द्राघिमा १३० डिगरी ३१ मिनिट। कुराइल-द्वीपसमूहका सिल-सिला येज्जो टापूके उत्तरपूर्व्व सीमासे आरम्भ होकर कामस्कट्कापर्य्यन्त चला गया है। पहले इस टापू-पर रूसका अधिकार था, किन्तु सन् १८७५ ई०में सघेलियन टापू रूसको देकर जापानने कुराइल-द्वीप-समूह रूससे ले लिया है। इधर, रिउकिउ-द्वीप-समूह जापान-द्वीपसमूहके क्यूशू टापूके पश्चिम-दक्षिण सीमापर अवस्थित है। रिउकिउ-द्वीपसमूह पश्चिम-दक्षिणमें फारमोसा द्वीपपर्य्यन्त चला गया है।

रिउकिउ-द्वीपसमूहपर भी जापानका अधिकार है
और सन् १८९४ ई०की चीन-जापानयुद्धके उपरान्त
जापानने चीनसे फारमोसा द्वीप ले लिया था। सो
इस समय जापान राज्यका विस्तार २७ डिगरी ५
मिनिट अक्षरेखामें और ३३ डिगरी २५ मिनिट
द्राघिमामें है।

जापान-राज्य ४ बड़े और प्रायः ३ हजार छोटे
टापुओंमें विभक्त है। इन छोटे टापुओंमें अनेक
इतने बड़े हैं, कि उनका स्वतन्त्र प्रदेश तय्यार कर
दिया गया है। किन्तु अधिकांश छोटे टापू इतने
लघु हैं, कि उनके शासनका भार उनके समीपवाले
प्रादेशिक टापुओंके जिम्मे कर दिया गया है। जापा-
नके चार बड़े टापुओंके नाम हैं,—येज़ो; हाण्डो,
शिकोकू और क्यूशू। इन चारों टापुओंमें उत्तर
ओर येज़ो और दक्षिण ओर क्यूशू है। इन चारों
टापुओंमें सबसे बड़ा हाण्डो टापू येज़ो और क्यूशूके
बीचमें है। बाकी, शिकोकू,—हाण्डो और क्यूशूके
मध्यमें है। अब जापानके सबसे बड़े हाण्डो टापूका
हाल सुनिये। हाण्डो और येज़ोके बीचमें सुगारू
प्रणाली है। हाण्डो टापूकी उत्तरीय सीमापर

और सुगारू प्रणालीके किनारे ओमासाकी नामक स्थान है। ओमासाकीसे दक्षिण-पूर्व जापान राजधानी टोकियोका फासला ५ सौ ९० मील है। टोकियोनगर हाण्डो टापूके ठीक दक्षिण-पूर्व किनारेपर बसा हुआ है। हाण्डो टापूकी दक्षिण-पश्चिम सीमापर हाण्डो और क्यूशू टापूके बीचमें शीमानोसेकी नामकी प्रणाली है। आगे, टोकियो नगरसे शीमानोसेकी प्रणालीके किनारेतकका विस्तार ५ सौ ४० मील है। इस प्रकार इस टापूकी लम्बाई १ हजार १ सौ ३० मील है। चौड़ाई, कहीं कहीं २ सौ मील है, किन्तु इसका अधिकांश भाग केवल १ सौ मील ही चौड़ा है। जापानियोंने इस टापूका कोई स्वतन्त्र नाम नहीं रखा है। वे इसको हाण्डो टापू कहते हैं सही, किन्तु जापानभाषामें हाण्डो शब्दका अर्थ प्रधान टापू है। जो हो; हम इस टापूको हाण्डो हीके नामसे लिखेंगे।

हाण्डोसे छोटा, किन्तु अन्य टापुओंसे बड़ा हाण्डोकी उत्तरपूर्व ओर सुगारू प्रणालीके पार येज़ो नामक टापू है। इस टापूकी उत्तरपूर्व सीमाका नाम शिरेटोको है। शिरेटोकोसे लेकर सुगारू

प्रणालीके किनारे धिराकानी अन्तरीपतकका विस्तार ३ सौ ५० मील है। येज्जो और सघेलियन-द्वीप-समूहके बीचमें ला परौस नाम्नी प्रणाली है। येज्जो द्वीपकी उत्तरीय सीमापर ला परौस प्रणालीके किनारे सोया अन्तरीप है। सोया अन्तरीपसे दक्षिणीय सीमाके परीमोसाकी नामक स्थानका फासला २ सौ ७० मील है। इस टापूका मध्यभाग एक अत्युच्च पर्व्वत-शृङ्ग है। इसी पर्व्वत-शृङ्गसे अनेकानेक नदियां निकलती हैं और टापूके भिन्न भिन्न भागोंमें बहती हैं। इस टापूमें सुगारूप्रणालीके किनारे होकाइटे नामक बन्दर है। जापानराज्यके अनेक बन्दरोंमें होकाइटेबन्दर भी अत्यन्त प्रशस्त और उपयोगी है।

पूर्व्वोक्त दोनो टापुओंसे छोटा, किन्तु शेष समस्त टापुओंसे बड़ा जापानका क्यूशू टापू है। यह टापू हाण्डोके दक्षिण पश्चिम कोनेमें है। इसकी उत्तरसे दक्षिण ओरकी सबसे बड़ी लम्बाई २ सौ मील है। और इसकी पूर्व्वसे पश्चिम ओरकी चौड़ाई ६० से ८० मीलतक है। इस टापूका जलवायु गर्म्म होनेकी वजह यहांकी पैदावार गर्म्म मुल्कोंकी जैसी होती है।

क्यूशूके पूर्व्व और जापानके ४ बड़े टापुओंमें

सबसे छोटा टापू शिकोकू है। यह टापू लम्बाई चौड़ाईमें क्यूशू टापूका आधा है। इसका जलवायु और यहांकी पैदावार क्यूशूसे मिलती जुलती है। यह टापू हाण्डो टापूके पश्चिमीय किनारेकी दक्षिण ओर,—किनारेकी प्रायः समरेखापर अवस्थान करता है। इसकी लम्बाई १७० मीलकी है।

पूर्वोक्त चारो टापुओंकी अपेक्षा कुछ छोटे ८ टापू ऊपर लिखे चारो बड़े टापुओंके पास हैं। जापान-द्वीपसमूहका पूर्व्वपार्श्व पासिफिक महासागरकी दिग-दिगन्तव्यापी जलराशिद्वारा घिरा हुआ है। इस द्वीपसमूहके पूर्व्वीय पार्श्वमें पीतसागर, जापान-सागर तथा ओखोस-सागर है। और ये ही तीनो समुद्र जापान-द्वीपसमूहको एशियाखण्डसे पृथक् करते हैं। जैसे स्थलपर अनेकानेक नद नदियां बहती हैं वैसे ही समुद्रमें भी अनेक बहती हुई नद नदिया पाई गई हैं। सम्भव ही समुद्रमें एक ही सुविशाल नद है जिसकी शाखायें और प्रशाखाये नाना समुद्रोंमें गई हैं और इन्हीं समुद्रीय नद नदियोंकी वजह नाना देशोंमें नानाप्रकारके मौसम प्रकट होते हैं। जापानके समीप भी समुद्रीय नदीकी एक कालीधारा बहती है।

जापान-द्वीपसमूहमें चिरकालसे भूकम्प आया करता है। यहां भूकम्पकी वजह प्रतिवर्ष प्रायः ५ सौ बार पृथिवी हिला करती है। अधिकांश भूकम्प हानि-रहित होते हैं। किन्तु गत सन् १८८८ ई०के भयङ्कर भूकम्पसे जापानके हाण्डो टापूको बड़ी क्षति सहना पड़ी थी। इससे भी पहले सन् १८५५ ई० में जापानके टोकियोनगरमें अति भीषण भूकम्प हुआ था। भूकम्पके साथ साथ पृथिवी फटकर आग निकलनेसे महाभयङ्कर अग्निक्रीला भी उपस्थित हुई थी। इस लोमहर्षण दुर्घटनासे टोकियो नगरके प्राय. १६ हजार मकान गिर पड़े थे। मकानोंके गिरने और उसी समय आग लगनेसे जो भीषण लोकक्षय हुआ होगा, वह विचारने हीसे समझमें आ सकता है। जापानके १८ आग्नेयगिरि अति प्रसिद्ध हैं।

जापानके पार्व्वत्यप्रदेशमें अनेक छोटी बड़ी झीलें हैं। अनेक बड़ी झीलोंमें ष्टीमर और जहाज चलते हैं। हाण्डो टापूकी वीवा नामकी झील ही अपेक्षाकृत बड़ी है। जापान-द्वीपसमूहमें अनेकानेक नदियां होनेपर भी खूब लम्बी नदी एक भी नहीं हैं। हाण्डो-टापूकी टोन नदी अपेक्षाकृत अधिक

लम्बी और चौडी है। यह १ सौ ७० मील लम्बी और ज्यादासे ज्यादा १ मील चौडी है।

जापान-द्वीपसमूहका प्रसार खूब लम्बा होनेकी वजह इसके भिन्न भिन्न स्थानोंमें भिन्न भिन्न प्रकारका जलवायु है। उत्तरीय-द्वीपसमूहमें शीतकी प्रबलता रहती है और दक्षिणीय द्वीपसमूहमें साधारण उष्णताकी। प्राय सितम्बर माससे वर्षा आरम्भ होती है। इसके उपरान्त वसन्तऋतु आती है और इसकी समाप्तिपर शरदृऋतु आरम्भ हो जाती है। जापानके भिन्न भिन्न भागोंमें शरदृऋतुका प्रभाव भिन्न भिन्न स्वरूपमें परिलक्षित होता है। जापानके पूर्व्वीय किनारेका जाड़ा मामूली होता है। उच्च पर्व्वतशृङ्गोंको छोड़कर समभूमिपर बहुत थोडी बरफ पड़ा करती है। किन्तु द्वीपसमूहके पश्चिमीय किनारेका और ही हाल है। एशियाखण्डसे आने-वाली वायु अपने साथ आर्द्रता लाकर जापान द्वीप-समूहके पश्चिमीय किनारेपर वर्षाऋतुमें मूसलधार पानी बरसाती है और शीतकालमें घोर हिमवर्षा करके नद नदी, गिरि, भूमि, अधित्यका उपत्यका आदिको तुषार-राशिसे आच्छादित कर देती है। और

तो क्या,—जापान-द्वीपसमूहके पूर्व्वीय किनारेपर कहीं कहीं २० फुट मोटी बरफकी तहका छोटासा टीला तय्यार हो जाता है। ऐसी जगहोंके रहनेवाले बरफ पड़नेपर अपने मकानके दोमञ्जिलेपर रहने लगते हैं। उधर बरफका टीला उनके मकानोंके निचले भागके द्वार आदि छिपाकर मकानके दूसरे मञ्जिलके बराबर ऊंचा हो जाता है। तब दो-मञ्जिलेके रहनेवाले दो-मञ्जिलेके द्वारसे निकलकर बरफपरसे आते जाते हैं। इस प्रान्तकी हरियालियां बरफके नीचे दब जानेपर सड़नेसे बच जाती हैं और बरफ गलते ही वे अपने पूर्व्ववत हरे भरे स्वरूपसे दर्शन देती हैं।

द्वीपोंका दक्षिणीय भाग अपेक्षाकृत गर्म्म रहता है। वहांका जलवायु उष्ण-आर्द्र होता है। इसी तरह दक्षिणीय शिकोकू और क्यूशू टापुओंसे चावल, रुई, तम्बाकू, ईख, मीठेआलू, नारङ्गिया आदि गर्म्म-देशकी पैदावार पैदा हो सकती हैं। ऊंचे ऊंचे पहाड़ हरीभरी घाटियां वनो उपवनोंका आधिक्य आदि इन टापुओंसे सदैव ही बसन्त-ऋतु जैसी बहार रक्खा करते हैं। उधर, हाक्को-डौपके भिन्न भिन्न स्थानोंसे भिन्न भिन्न प्रकारकी पैदावार होती है। टापूके दक्षिण

भागमें गर्म्म देशोंकी जैसी पैदावार होती है। पैदा-वारमें रूई और चावल ही प्रधान हैं। इसके पूर्व्व-किनारेवाली घाटियोंमें चाय उत्पन्न होती है। इस द्वीपकी प्रधान पैदावार रेशम है। जापानसे विदेशमें अधिकांश चाय और रेशम ही जाता है। जापान-द्वीपसमूहमें अधिक नदी नाले होनेकी वजह चावल अधिकतासे उत्पन्न होता है। जापानमें एक प्रकारके धानको सींचनेकी जरूरत नहीं होती। अवश्य ही ऐसे धानका चावल इस देशके साधारण चावलोंकी अपेक्षा घटिया होता है।

जापानवासी प्राचीनकालमें अपने देवताओंसे ५ फसलें पानेकी प्रार्थना किया करते थे। इन पांचों फसलोंमें उत्पन्न होनेवाले ५ पदार्थोंके नाम यथाक्रम ये हैं ;—चावल, बजरा, जव, गेम और मोरघम [१]। कल्पनातीत कालसे इन पांचों पदार्थोंकी खेती जापानमें होती चली आती है। और जापान-द्वीप-समूहके प्राय प्रत्येक स्थानमें ये पदार्थ उत्पन्न हो सकते हैं। विशेषत बजरा जव तथा गेम जापानके प्रत्येक भागमें उत्पन्न होता है और जापानके गांव-वालोंको इन्हीं तीनों पदार्थोंपर उदरपोषण करना

पड़ता है। जापान-द्वीपसमूहके समस्त उत्तरीय भागोंमें, बकवीट नामक एक प्रकारका गेहूं उत्पन्न होता है। यह अन्न मञ्चूरियाके वनोंमें आपसे आप उत्पन्न होता है और किसी समय जापानवासी इस अन्नको मञ्चूरियासे ले आये थे।

एशिया-महाद्वीपके पालतू जानवरोंकी अपेक्षा जापानके पालतू जानवरोंकी संख्या बहुत काम है। घोडा इस टापूमें बहुत दिनोंसे पाया जाता है। पहले इससे जीनसवारी और, लदुए जानवरका काम लिया जाता था, किन्तु कुछ दिनोंसे यह गाड़ीमें भी जोता जाने लगा है। गाय और बैल भी जापानके पुराने पलुए जानवर हैं। जापानवासी गायपर श्रद्धाभक्ति रखते हैं। गजके बालतकको पीड़ा पहुंचानेमें पाप समझते हैं। अवश्य ही पुराने जमानेमें जापानवासी गोदुग्धका व्यवहार नहीं जानते थे। भेड़ें इस टापूमें न पहले पाई जाती थीं और न अब पाई जाती हैं। कुछ परकीयदेशवासी अपने साथ थोड़ी बहुत भेड़ें रखे हुए हैं। बकरियां अधिकतासे प्राप्त नहीं होतीं। कभी कहीं उनकी लघुसंख्या दिखाई देती है। देखते हैं, जापानियोंकी बकरियोंसे ज्यादा

मुहब्बत भी नहीं है। हक्‌ू प्रदेशके पास ओशिमा-टापूमें एकबार बकरियोंकी संख्या खूब बढ़ जानेकी वजह और उनके द्वारा उपजकी अधिक हानि पहुंचनेके कारण जापानियोंने सन १८५० ई०में बकरियोंको मार काटकर उनका सर्व्वनाश कर दिया था। सूअर जापानमें पहले नहीं थे। रिउक्यू टापूसे चीनसे मंगाये गये और जापानके भिन्न भिन्न भागोंमें इतरदेशवासी इन्हें अपने साथ रखे हुए हैं। कुत्ते बिल्ली और मुरगियां इत्यादि जापानमें सर्व्वत्र पाये जाते हैं।

खूब बसे हुए जापान-द्वीपसमूहमें जङ्गली जन्तु बहुत कम पाये जाते हैं। येज़ोके सघन-वनाच्छादित पार्व्वत्य-प्रदेशमें और हाण्डो टापूके उत्तरीय भागमें काले रीछ मिलते हैं। येज़ो और क्युराइल-द्वीपसमूहमें लालरङ्गके बड़े बड़े रीछ पाये जाते हैं। भेड़िये बहुत कम मिलते हैं। किन्तु लोमड़िया प्रायः सर्व्वत्र ही पाई जाती हैं। उत्तरीय युरोपकी भांति जापानमें भी लोमड़ीकी बड़ी मर्य्यादा की जाती है। इसी वजह जापानकी लोमड़ियोंका नाश नहीं हुआ है। जापान-द्वीपसमूहमें हरिणोंकी अधिकता है। विशेषतः येज़ोद्वीप हरिणोंके झुण्डोंसे भरा हुआ है।

जापान-द्वीपकी चारो ओर समुद्रीय जलमें मछ-लियां खूब अधिकतासे मिलती हैं। जापान-टापूके समीप होकर बहनेवाली समुद्रीय नदी ही इन मछलियोंकी अधिकताका कारण है। जापानवासी मछलियां खूब खाते हैं।

जापानराज्यको प्रदेशोंमें विभक्त करना ही प्रकृत शासनका प्रयोजनीय आरम्भिक कार्य्य था। सीसू नामक जापाननरेशने सन् १३१ ई०से लेकर १९० ई० पर्य्यन्त-राज्य किया था। इन्हीं नरेशने पहले पहल जापानको ३२ प्रदेशोंमें बांट दिया था। आगे, सन् २०२ ई०में जापान-सम्राज्ञी जिङ्गोने कोरियापर चढ़ाई की थी। जिङ्गोने कोरियासे लौटनेके उपरान्त कोरियाराज्यविभक्तिकी तरह अपने देशकी विभक्ति भी की। इसके उपरान्त नाना जापान-नरेशोंके समयमें नानारूपसे जापानकी विभक्ति हुई। अन्तमें जापानकी प्रादेशिक विभक्तिका स्वरूप इस प्रकार बन गया;—गोकिनाई—इसमें ५ स्वदेशीय प्रदेश Home provinces संयुक्त हुए; टोकायडो—पूर्व्व ओरवाले समुद्रके पार्श्ववर्त्ती १५ प्रदेश इसमें संयुक्त किये गये. टोसेन्डो—पूर्व्वीय पार्व्वत्य प्रदेशकी

गिद्रके ८ प्रदेश इसमें मिलाये गये : सेनिरडो—पर्व्वत-
पृष्ठ प्रान्तके ८ प्रदेश इसमें शामिल किये गये : सैनि-
योडो—पर्व्वताग्र प्रान्तके ८ प्रदेश इसमें जोड़े गये :
सैकैडो—पश्चिम ओर वाले समुद्रके निकटवर्त्ती ८ प्रदेश
इसमें मिलाये गये। इस प्रकार, जापान कुल ८ प्रदेशोंमें
बांटा गया था। इसके उपरान्त जापान-नरेशोंने
युद्धमें जमीन जीतकर अपना राज्य और फैला दिया।
सन् १८६८ ई० की लड़ाईके उपरान्त जापान-नरेशने
अपने राज्यमें और ७ प्रदेश मिलाये। आगे येज़ो टापूमें
होक्काइडो नामक ११ प्रदेशवाला एक देश तय्यार किया
गया और इस प्रदेश-वृद्धिके कारण जापान समस्तमें
८४ प्रदेश हो गये। हालमें इन ८४ प्रदेशोंका
शासनभार ३ प्रधान नगरोंके अन्तर्गत कर दिया गया
है। इन ८५ प्रदेशोंमें शान्तिस्थापन रखनेके लिये
९२ पुलिस-विभाग बनाये गये। आगे इन्हीं ८५
प्रदेशोंको जापानसल्तनत मानी गई है। टोकियो
ओसाका और क्योटो ही जापानके प्रधान और राजो-
नगर हैं। जापानमें बड़े बड़े बन्दरोंकी तादाद कम
और छोटे छोटे बन्दरोंकी ज्यादा है। सन् १८५८
ई० की सन्धिपत्रके जापानके प्रधान नगरोंकी बन्द-

संख्या इस प्रकार मालूम हुई।—राजधानी टोकियोमें १० लाख ५५ हजार २ सौ मनुष्य, ओसाकामें ४ लाख ७३ हजार ५ सौ ४१ मनुष्य; क्यूटोमें २ लाख ८९ हजार ५ सौ ८८ मनुष्य; नगोयामें १ लाख ७० हजार ४ सौ ३३ मनुष्य, कोबमें १ लाख ३६ हजार ९ सौ ६८ मनुष्य; योकोहामामें १ लाख २७ हजार ९ सौ ८७ मनुष्य। यह हुआ उन शहरोंका हिसाब, जिनमें १ लाखसे ज्यादा मनुष्य बसते हैं। इन शहरोंके अतिरिक्त जापानके ४ नगरोंकी वसती १ लाख और ६० हजारके बीचमें है। १२ शहर ऐसे हैं, जिनकी वसती ६० हजार और ४० हजारके बीचमें है। आगे, १२ ऐसे शहर भी हैं जिनकी आबादी ४० हजार और ३० हजारके बीचमें है। इनके अतिरिक्त इनसे भी छोटे नगरोंकी संख्या बहुत बड़ी है।

जापानकी १ करोड़ २० लाख एकड़ भूमिपर खेती होती है। हिसाब लगाकर देखा गया है, कि प्रति जापानवासीके हिस्से में पौन एकड़ जोती हुई भूमि पड़ती है। जमीनकी पैदावारके विचारसे प्रत्येक मनुष्यके हिस्सेका यह थोड़ा भूभाग भी थोड़ा नहीं कहा जा सकता। जापानमें २ फसलें होती

द्वितीय परिच्छेद।

आजकलके जापानवासियोंमें २ जातियां हैं। एक एनोस और दूसरी जापानी। अल्पसंख्यक एनोस-जातिके लोग हाक्कैडो द्वीपकी उत्तर ओर येज़ो टापूमें बसते है। सन् १८७५ ई०में जापानने रूसको सघेलियनद्वीप देकर रूसका क्युराइल-द्वीपसमूह ले लिया था। उस समय सघेलियन-द्वीपपर बसनेवाले जापानी और एनोस सघेलियन-द्वीप छोड़कर जापानमें आ गये थे। सघेलियनसे जापानमें आये हुए एनोस जातिके लोग भी येज़ो टापू हीमें बसते हैं।

एनोस जातिके लोग जापानके प्राचीन निवासी समझे जाते हैं। प्राचीनकालमें ये लोग येज़ो और हाण्डो टापूके उत्तरीय भागमें निवास करते थे। इनकी दक्षिण ओरके देशमें जापानियोंका निवास था। जापानियोंके इतिहासोंद्वारा प्रकट होता है, कि जापानी अपनी उत्तर ओर बसनेवाली असभ्य "एनोस" जातिको दमन करनेके लिये फौजें रवाना किया करते थे। जापानियोंने असभ्य जातिसे लड़ने भिड़नेके

लिये अपनी जातिके एक भागको लड़ाकी जाति बना
ली थी। प्राचीनकालमें जापानवासी एनोसको "यमिशी"
कहते थे। यमिशी शब्द यदि चीनकी भाषामें
लिखा जावे, तो उसका अर्थ "असभ्य कीड़ा मकोड़ा" हो
जाता है। जापानी भाषामें "एनोस" शब्दका लव
"इनू" है। इनूका अर्थ कुत्ता है। किन्तु एनोस
जातिके लोग अपनेको एनोस न कहकर "येञ्ञो"
कहते हैं।

अनेक शताब्दियोंसे विजित होनेकी वजह और
अन्यजातिसे दबाये जानेके कारण एनोस जातिमें कट्टर-
पन नाममात्रको बाकी नहीं रहा है। अब वह शान्ति-
प्रिय, नम्र और बहुत सीधी बन गई हैं। जापानकी
सन् १८८० ई०वाली मनुष्यगणनाद्वारा जान पड़ा, कि
येज्ञो-द्वीपमें १६ हजार ६ सौ ३७ एनोस बसते हैं।
एनोसकी इस तादादके क्रमशः घटनेकी सम्भावना की
जाती है। एनोस परिश्रमी और मजबूत होते हैं।
इस जातिके लोगोंके सर्वाङ्गमें बहुत बड़े बड़े बाल
होते हैं। उनके कपड़े, मकान, औजार और खाना
पीना आदि सब पुराने ढङ्गके हैं। शताब्दियां गुजर
गईं, किन्तु एनोस जाति अपनी बाल्यावस्थामें

जहां पहले थी वहीं है। एनोस बहुत गन्दे होते हैं। बहुत कम नहाते है—साल दो सालमें कपड़े बदलते है। वे कोई पेशा वा रोजगार नहीं करते। लिखना पढ़ना नहीं जानते। उनके धर्म्मका भी शिर पैर नहीं मालूम होता। पर्व्वत और नदी पूजाते हैं। प्राचीनकालमें इस जातिके आदमखोर होनेका सन्देह किया गया था। किन्तु खूब जाच करनेके उपरान्त इनकी आदम-खोरी अच्छी तरह प्रमाणित नहीं हुई। जो हो, मारकोपोलो साहब अपनी किताबमें जापानकी इस जातिको आदमखोर ही बता गये हैं।

एनोसके अतिरिक्त जापानमें एक और जङ्गली जाति रहती थी। यह जाति भूमिमें गड्हे खोदकर उसमें निवास करती थी। गड्हेके मुंहपर छप्पर डालती थी। जापानियों और एनोसके आक्रमणसे यह जाति नष्ट हो चुकी है। सघेलिदन, कमसकाटका और क्यूराइल प्रभृति टापुओंमें कहीं कहीं इस जातिके लोग नाममात्रको दिखाई देते हैं। जापानी इन्हें कोडिटो और एनोस इन्हें कोरोपोक्गुरु नामसे पुकारते हैं।

अब 'जापानी' जातिका हाल [illegible]

था और वर्त्तमान जापान-जातिमें भारतवर्षवालोंकी सन्ततिका भी बड़ा भाग मिला हुआ है।

जापानियोंकी ऊंचाई साढ़े ४ फुटसे लेकर ५ फुट-तक हुआ करती है। जापानी स्त्रियोंकी ऊंचाई जापानी पुरुषोंकी अपेक्षा थोड़ीसी छोटी होनेपर भी प्रायः बराबर होती हैं।

तृतीय परिच्छेद।

सन् २८४ ई० तक जापानवासी लिखना और छापना नहीं जानते थे। इसके उपरान्त उन लोगोंने ये दोनो विद्यायें चीनसे सीखीं। पहले जापानवासी अपना इतिहास जबानी याद रखते थे। लिखने और छापनेकी विद्या प्राप्त करनेके बाद उन्होंने नियमित-रूपसे अपना इतिहास तय्यार किया। सबसे पहला,—जो जापान-इतिहास तय्यार हुआ उसका नाम था कोजिकी। इसके ८ वर्ष बाद याने सन् ७२० ई०में जापानियोंने निहोङ्गी नामका अपने देशका दूसरा इति-हास तय्यार किया। दोनो इतिहासोंमें प्रायः एक ही विषय है। अवश्य ही निहोङ्गी इतिहासमें प्रत्येक विषय विस्तारपूर्व्वक लिखा जानेकी वजह जापान-वासी इसी इतिहासको ज्यादा मानते और पसन्द करते हैं। इस इतिहासका भाषान्तर अङ्गरेजी भाषामें भी हो चुका है। इसी भाषान्तरके आधारपर वर्त्त-मान परिच्छेदमें हम जापानका इतिहास लिखनेकी चेष्टा करते हैं।

परकीयजातिवालोंका पहला दल हाण्डो टापूके ज़ुनो प्रान्तमें उतरा और वहीं वह रहने लगा। आगे दूसरा दल क्यूशू टापूमें उतरा और बहुत दिनों-तक वहां रहा। इस दलका एक सरदार था। काल पाकर सरदारके दो पोते उत्पन्न हुए। बड़ेका नाम था यशूयी और छोटेका जिम्मू। यशूयी और जिम्मूके मनमें अपना राज्य बढ़ानेका खयाल पैदा हुआ। वे अपनी जातिका दलबल लेकर हाण्डो और क्यूशूके बीचकी प्रणाली पार करके हाण्डो टापूमें पहुंचे। हम पहले कह चुके हैं, कि जापानमें जाने-वाले पहले दलके लोग हाण्डो टापूमें बसे थे। इस पहले दल तथा राजकुमार जिम्मूके दलमें घोर संग्राम हुआ। संग्राममें जिम्मूने जयलाभ किया। उस जातिको जीतकर वे आगे बढ़े और गड्ढोंमें रहने-वाली जङ्गली जातिको भी मार भगाकर यामाटोप्रदेशके काशीवाड़ा स्थानमें अपना विशाल प्रासाद निर्म्मित किया और वहीं अपनी राजधानीकी नीव डाली। ईसामसीहके जन्मसे ६ सौ ६० वर्ष पहले काशीवाड़ा-वाले विशाल प्रासादकी नीवका पत्थर रखा गया था और उसी समयमें जापान-साम्राज्यका स्थापित होना

समझा जाता है। जापानियोंका वर्त्तमान सन् भी इसी समयसे आरम्भ हुआ था। आगे, इसी सन्‌में जापानसाम्राज्यका पहला बादशाह जिम्मू सिंहासनारूढ़ हुआ। सम्राट् जिम्मू १७५ वर्षपर्य्यन्त राज्य करके १ सौ २७ वर्षकी अवस्थामें पञ्चत्वको प्राप्त हुआ। सम्राट् जिम्मूका असामान्य पुरुषार्थ ही उसकी अलौकिक शक्तिका परिचय है।

अपने पिताकी मृत्युके उपरान्त जिम्मूका तीसरा पुत्र सुइजी सिंहासनारूढ़ हुआ। जान पड़ता है, कि उस समय जापानमें सिर्फ ज्येष्ठ पुत्रको सिंहासनारूढ करनेकी प्रथा नहीं थी। पिता अपने पुत्रोंमें सुयोग्य पुत्र देखकर उसे राजतिलकका अधिकारी करता था। सुइजीने सिंहासनारूढ़ होनेके उपरान्त अपना एक स्वतन्त्र महल तय्यार कराया। इसके उपरान्त सन् ७०९ ई० पर्य्यन्तके समस्त जापाननरेशोंने अपने महल अलग अलग तय्यार कराये थे। उस जमानेमें ईंट पत्थरकी जोड़ाईका काम जारी न रहनेकी वजह प्रत्येक सम्राट द्वारा तय्यार कराये हुए महल बहुत शानदार नहीं हुए थे। जापानके वर्त्तमान शिण्टोमन्दिर पुराने जमानेके काष्ठनिर्म्मित मह-

पिताकी मृत्युसे पहले ही मर गया था। सम्राट्
कायकी ५८ वर्षपर्य्यन्त राज्य करनेके उपरान्त १ सौ
४३ वर्षकी अवस्थामें पञ्चत्वको प्राप्त हुआ।

इस सम्राट्की मृत्युके उपरान्त इसका पोता—
याने सम्राटकुमार यामाटोडेटका लड़का सीमू जापा-
नके सिंहासनपर अधिष्ठित हुआ। इस सम्राट्के समय
कोई विशेष घटना नहीं हुई। इस सम्राट्ने ६८ वर्ष-
पर्य्यन्त राज्य करके एक सौ ८ वर्षकी अवस्थामें देह-
त्याग किया।

सम्राट् सीमूकी मृत्युके उपरान्त इसका ज्येष्ठ
कुमार चुआई सिंहासनारूढ़ हुआ। इस सम्राट्ने केवल
८ वर्षपर्य्यन्त राज्य करके शरीर त्याग किया। इस
सम्राट्ने कोरियापर आक्रमण करनेकी इच्छा की थी।
जापानके हाण्डोद्वीपकी अपेक्षा जापानका क्यूशूद्वीप
कोरियाके अधिक समीप है। सुतरां कोरियाके समीप
पहुंचनेके अभिप्रायसे इस नरपतिने अपनी राजधानी
हाण्डोसे हटाकर क्यूशूमें बनाई थी। किन्तु कोरिया-
पर आक्रमण करनेके पहले ही सम्राट्की मृत्यु हो
गई। सम्राट् चुआईकी सम्राज्ञी जिङ्गोकोगो बहुत
बुद्धिमती और वीररमणी थी। इसने अपने पतिकी

मृत्युका समाचार छिपा रखा और अपने मन्त्रीसे परामर्श करके बहुत बड़ी सैन्य साथ लेकर कोरियापर चढ़ाई की। सम्राज्ञीने कोरियाविजय किया। कोरिया राज्यको अपना करद बनाया। इसके बाद जापानमें लौटकर अपने पतिकी मृत्युका समाचार प्रकाश किया और अपने पुत्र ओजिनको सिंहासनपर बैठाया। जापानमें ऐसी वीररमणियां विरल हुई हैं। यह अपनी विचक्षण बुद्धि और अद्भुत कार्य्यदक्षताकी वजह आज तक जापानके घर घर सुख्यातिके स्वरूपमें जी रही है।

सम्राज्ञी जिङ्गोकोगोका बेटा ओजिन ४० वर्ष-पर्य्यन्त जापानका शासन करके ५ सौ १० वर्षकी अवस्थामें परलोकगामी हुआ। इसके बाद सम्राट् ओजिनका मंझला लड़का निनटोकू सिंहासनपर बैठा। यह ८६ वर्षतक राज्य करके १ सौ १० वर्षकी अवस्थामें मृत्युको प्राप्त हुआ। यह सम्राट् बहुत समझदार और दयालु था। इसने जापानके प्रत्येक प्रदेशमें आदमी भेजकर उनसे वहांका इतिहास लिखवाना आरम्भ किया था। इस सम्राटके बादसे जापान-इतिहास बहुत अच्छी तरह लिखा गया। हम आगे जो कुछ लिखेंगे अब इसी इतिहासके आधारपर लिखेंगे।

चतुर्थ परिच्छेद।

प्राचीनकालसें जापानराज्यका शासन जातीय परिवार-शासनके नियमानुसार किया जाता था। सम्राट् सबसे बड़ा सरदार माना जाता था और उसके जागीरदार उसके जङ्गीसहायक समझे जाते थे। दरबारसें जितने ही बहुदर्शी और अनुभवी सलाहकार मौजूद रहते थे। और मौजूद रहते थे, अनेक देशी तथा शाही भृत्य-समूहके प्रधान अफसर। इन लोगोंके माहिकवेतनका जिक्र जापान-इतिहाससें नहीं मिलता। प्राचीनकालमें टिक्सके रुपये वसूल नहीं किये जाते थे। टिक्ससें लोगोंसे चीजें ली जाती थी। आपसके लेन देनसे भी रुपयेकी जगह चीजोंका बदल बदल होता था। कुम्हार चमारको मट्टीके बरतन देता था। चमार इसके बदले कुम्हारको जूते देता था।

जापानमें प्राचीनसमय शिण्टोधर्म्म ही प्रचलित था। आजकल जापानमें बुद्धधर्म्म प्रबल हो गया है सही—किन्तु इसकी प्रबलतासे शिण्टोधर्म्म एक-

जापान-इतिहास प्राचीनकालकी जापानी भाषामें लिखे गये हैं। प्रत्येक देशकी प्राचीनभाषाका स्वरूप प्राचीनकालकी कविता हीसे मालूम होता है। सुतरां जापानकी प्राचीनभाषा भी उनकी अति प्राचीन कविताओं द्वारा मालूम हुई है। प्रमाण, तो नहीं मिलता, किन्तु अनेक इतिहासलेखकोंका कथन है, कि प्राचीन कालकी जापानी भाषा साइबेरिया और उत्तरीय चीनकी भाषा बिगाड़कर तय्यार की गई थी।

प्राचीनकालकी जापानियोंको समय जाननेकी यथोचित रीति मालूम नहीं थी। दिनके समय वे सूर्य्यकी स्थिति देखकर समय निर्द्धारित करते थे और रातके समय मुरगोंकी बाग सुनकर। अन्तमें चीनी लोग अपना पञ्चाङ्ग जापान ले गये। उसी समयसे जापानवासी बाकायदा समय जानना सीख गये।

पुरानेवक्तके जापानी निहायत गोश्तखोर थे। जापानमें बुद्धधर्म्म फैलनेपर जापानियोंकी गोश्त-खोरी बहुत घट गई। अनेक जीवोंका धर्म्मवर्जित गोश्त उन्होंने छोड़ दिया। आजकलके जापानी

अपने देशका पक्वान्न, मछली और घोंघे ही विशेषतः खाते हैं। जापानकी एक देशी मदिराका नाम है साकी। जापानमें साकी बहुत प्राचीनकालसे तय्यार की जाती है। इसको प्राचीनकालके लोग भी पीते थे और आजकलके लोग भी पीते हैं। जापानी कहते हैं साकी हमारे देशमें आवि-ष्कृत हुई है। किन्तु अनेक प्रमाणोंसे साकीका चीनसे जापानमें जाना सिद्ध होता है। अस्तु; प्राचीन-कालके जापानी लकड़ीकी छुरियोंसे काटने छांटनेका काम करते थे—मट्टीके बरतनोंमें खाना पकाते थे और शाहबलूतकी पत्तियोंको सींकोंसे जोड़कर दोने बनाते और उन्हीं दोनोंमें पानी पीते थे।

जापानकी पुरानी कहानियोंसे जान पड़ता है, कि वे तीन तरहके कपड़े व्यवहारमें लाते थे। मोटा, पतला और चमकीला। ये तीनो तरहके कपड़े वल्कल-वृक्षकी छाल, सन और जानवरोंके चमड़ेसे तय्यार किये जाते थे। सन् ८०० ई०में जापान-सम्राट [illegible]के समय भारतवर्षसे जापानमें पहले [illegible] रुई गई। इसके पहले जापानमें रुई [illegible] [illegible] नहीं होता है। भारतवर्षसे रुई

जानेपर जापानियोंने सूती कपड़े तय्यार करना शुरू किये। जापानी पायजामा, ढीला कुरता, कमरबन्द और टोपी विशेषतः व्यवहारमें लाते थे। अगले वक्तमें जापानमें आभूषण पहननेकी प्रथा बहुत तेज थी। स्त्री पुरुष सभी आभूषण पहना करते थे। प्राचीनसमयके जापानी शृङ्गारदानकी सजावट,—शीशा और कङ्घीसे खूब काम लेते थे। प्राचीन-समयका शीशा कांचसे नहीं,—किसी धातुसे बनाया जाता था। उस धातुका नाम अज्ञात है।

प्राचीनकालके शिण्टोमन्दिर ही जापानके प्राचीन-कालके मकानोंके नमूने हैं। ये मकान सिर्फ काटसे तय्यार किये जाते थे—इनकी बनावटमें बहुत सादगी रहती थी। लकड़ीके ४ मोटे मोटे स्तम्भ गाड़कर उसीपर काटकी गच, लकड़ीके तख्तोंकी दीवारें और फूसकी छत तय्यार कर ली जाती थी। प्राचीनकालके बादशाहोंका निवास भी ऐसे ही झोप-ड़ेनुमा मकानोंमें होता था।

खास जापानमें नाना प्रकारके पौधे उत्पन्न होते थे और इस समय भी उत्पन्न होते हैं। उन पौधोंसे [illegible] जापानमें अन्य प्रयोजनीय और उपयोगी

पौधे विदेशसे गये। चाय, आलू और नारङ्गी एशियासे गईं। १६ वीं शताब्दिमें सुरती पुरतगालसे गई और गत ८ वीं शताब्दिके आरम्भमें रूई भारतवर्षसे गई।

प्राचीनकालके जापानियोंके औजार बहुत कम थे। एक औजार था मछली पकड़नेकी वंसी और दूसरा हंसवानुमा तलवार। इसके अलावा वे लकड़ी आदि चीरनेके लिये एक तरहकी कुल्हाड़ीसे काम लेते थे। यह कुल्हाड़ी पत्थर या हरिणके सींगद्वारा तय्यार की जाती थी। प्राचीनकालमें जापानियोंके हथियार थे,—तीरकमान, बरछी, तलवार और छुरा। जापानियोंके किले बहुत सादे होते थे। लकड़ीके लट्ठोंके सिरान हीसे किला तय्यार कर लेते थे।

प्राचीनकालमें जापानी घोड़ों और नावोंद्वारा स्थानान्तरको यात्रा किया करते थे। बुद्धधर्म्म प्रचारके उपरान्त जापानमें बैलगाड़ी भी चलने लगी, किन्तु बहुत दिन तक बैलगाड़ीपर सिवा [illegible]-सम्राटके और कोई सवार नहीं होता था।

जापानदेशमें [illegible] खासा [illegible] [illegible] है। [illegible] हजार [illegible] [illegible]-

खूब सभ्य और शिक्षित समझा जाता था। इस बातसे यह समझना होगा, कि जापानमें जापान-साम्राज्यका आविर्भाव होनेके बहुत पहलेसे चीन शिक्षित और उन्नत माना जाता था। यदि जापानियोंको मङ्गोलियनजातिकी शाखा समझना ही पड़ेगा, तो साथ साथ यह भी मान लेना पड़ेगा, कि मङ्गोल-जातिके चीनी और जापानी एक ही वृक्षकी दो शाखायें हैं। जापानी जातिमें अपूर्व धारणाशक्ति है। उन्होंने चीनसे विद्या धारण की चीनसे विज्ञान सीखा। भारतसे बुद्धधर्म पाकर उसको शिरोधार्य्य किया। आगे, उसी धारणा शक्तिके बलसे पाश्चात्य जातियोंकी नाना विद्यायें वे कृतार्थता पूर्व्वक सीख रहे हैं।

जापान-सम्राट निन्तोकूका हाल हम पीछे लिख आये हैं। इसका चौथा पुत्र और जापानका १८ वां सम्राट इन्क्यो सिंहासनारूढ़ हुआ। इसके शासन-कालमें कोरियाकी वैद्यकविद्याका प्रचार जापानमें हुआ। सम्राट इन्क्योकी मृत्युके उपरान्त उसका द्वितीय पुत्र इयको सिंहासनपर बैठा। इसने अपनी चाचीके साथ विवाह किया। इस सम्राटके मरनेके

बाद इसका छोटा भाई चूरीयाकूटिन्नो सिंहासनपर बैठा। इसकी मृत्युके उपरान्त इसका पुत्र सीनो जापानका सम्राट बना। सीनो ५ वर्षपर्य्यन्त राज्य करके मर गया। इस सम्राटकी सन्तति न रहनेकी वजह जापानके १८ वें सम्राट् रीचूके घरानेका राजकुमार केनजो सिंहासनपर बैठा। इसकी मृत्युके उपरान्त इसका बड़ा भाई निनकेन जापानपति बना। इसकी मृत्युके उपरान्त मुइत्सू, केताईटिन्नो, अङ्कान टिन्नो, और शेङ्कुआटिन्नो नामक सम्राट यथाक्रम सिंहासनपर बैठे।

शेङ्कुआटिन्नोकी मृत्युके उपरान्त सम्राट् केताईटिन्नोका पुत्र किम्मीटिन्नोका राज्याभिषेक हुआ। यह ३२ वर्षपर्य्यन्त राज्य करके ६२ वर्षकी अवस्थामें पञ्चत्वको प्राप्त हुआ। इसी सम्राट्के समयमें,—यानी सन् ५५२ ई॰ सं,—शाक्यमुनि वा बुद्धदेवका धर्म जापानमें पहुंचा। भारतके इतिहाससे जान पड़ता है, कि मध्यदेशके नरपति कनिष्कने इस मसीहकी उत्पत्तिके बाद २ सौ ५७ वर्ष पूर्व बुद्धधर्म स्वीकार किया था। इसके इतने दिनों बाद उन्होंने जापान [illegible] [illegible] बुद्धधर्मवाले [illegible]

उपदेशकदल भेजे थे। जान पड़ता है, कि यही
दल धीरे धीरे एशियाखण्डमें फैलकर बुद्धधर्मका
प्रचार करता रहा, और इस दलकी चेष्टासे
महाराज अशोकके समयसे प्राय ५ सौ वर्षके उपरान्त
जापान पहुंच सकी। इसने जापानमें बुद्धधर्म
प्रतिष्ठित की। जापानियोंको बुद्धसूत्र सिखाई।

सम्राट् सिकौटोकोकी मृत्युके उपरान्त उनके
भाई बिन्तात्सूटेनो सिंहासनारूढ़ हुआ। इसीके
शासनकालमें कोरियासे जापानमें इतनी चीजें
आईं :—बुद्धधर्मकी पुस्तकें, एक मन्दिर बनानेवाला
एक मूर्त्ति बनानेवाला, एक बौद्धपुजारी, अनेक
बुद्ध-धर्मके उपदेशक और एक सन्यासिनी। इस
सम्राट्ने कोरियासे अनेक बुद्धप्रतिमायें मंगाईं और
उन्हें जापान-द्वीपसमूहके भिन्न भिन्न भागोंमें प्रतिष्ठित
करवा दीं।

सम्राट् बिन्तात्सूकी मृत्युके उपरान्त योमी न टेन-
नो सम्राट हुआ। इस सम्राट्के समय ओमिजापान
और निप्पोनजापानियोंमें कुछ झगड़े चले। इस
सम्राट्की मृत्युके उपरान्त सुसुन टेनो सम्राट सिंहा-
सिंहासनारूढ़ हुए। इस सम्राट्के समयमें

बुद्धधर्म्म खूब प्रबल हो गया। शिण्टोधर्म्म अधो-गतिको प्राप्त हुआ।

सम्राट् सुजनकी मृत्युके उपरान्त जापानके भूत-पूर्व्व सम्राट् योमीकी बहन सुइकी जापानकी सम्राज्ञी हुई। वह सम्राज्ञी अपने भतीजे शोटोकूतायशीसे राज्यकार्य्यमें सहायता लेती थी। जापान-इति-हासमें शोटोकूतायशीकी बहुत तारीफ लिखी है। यहांतक लिखा है, कि शोटोकू उत्पन्न होते ही बात-चीत करने लगा था। जो हो; शोटोकू विद्वान बुद्धिमान और धीर गम्भीर पुरुष था। वह एक ही समयमें अनेक काम विधिपूर्व्वक सम्पन्न करता था। उसने जापानका बुद्धधर्म्म बहुत पुष्ट किया। राज्यके समस्त उच्च-कर्म्मचारियोंको बुद्धदेवकी ताम्बेकी मूर्त्ति अपने घरमें स्थापन करनेके लिये बाध्य किया। इन्हीं मनुष्यके समयमें बुद्धधर्म्मकी ५ आज्ञायें जापानमें जारी की गईं। पांचों आज्ञाओंका मर्म्म है कि :—

(१) चोरी न करना।

(२) झूठ न बोलना।

पञ्चम परिच्छेद।

आजकल संसारमें तीन तरहसे राज्यशासन होता है। एक प्रजाद्वारा,—जैसे फरांसमें और अमेरिकामें। दूसरा सम्राट्‌द्वारा,—जैसे रूसमें और रूम इत्यादिमें। तीसरी तरहसे शासन होता है सम्राट् और प्रजा दोनोंद्वारा। विलायतमें तथा अन्यान्य देशोंमें इसी तरहका शासन प्रचलित है। सो जापानमें पहले सम्राट्‌द्वारा शासन हुआ करता था। बादशाहकी आज्ञा ही राजविधान समझी जाती थी, किन्तु वर्त्तमान समयमें जापानका शासन विलायतके शासन जैसा होता है। जापानसम्राट् अपनी प्रजाका परामर्श लेकर जापानका राज्यकार्य्य करते हैं।

गत परिच्छेदके अन्तमें हम सम्राज्ञी सुइकोकी मृत्युका हाल लिख चुके हैं। इसके उपरान्त सम्राट् जोमेई, सम्राज्ञी कोक्योकु, सम्राट् कोटोकु, सम्राट् साइमेई, यथाक्रम सिंहासनारूढ़ हुए। सम्राट् साइमेईके बाद सन् ६६८ ई०में सम्राट् तेनजी सिंहासनारूढ़ हुआ था। जापानमें इन दोनों [illegible]

जाती थी। सन् ७५८ ई०के उपरान्त सम्राट् जुन्निनके शासनकालमें जापानमें सोनेका सिक्का पहले पहल चलाया गया। इसी सम्राट्के शासनकालमें शवदाहकी प्रथा जापानमें चली। आजकल भी जापानका एक समाज अपने मृतकोंका शवदाह किया करता है। सन् ६९० ई०के उपरान्त सम्राज्ञी जितोके शासनकालमें बुद्धमन्दिरोंकी गणना ४३से बढ़कर ५ सौ ४५ हो गई थी। सन् ७३६ ई०में सम्राट् शोमूके शासनकालमें बुद्धदेवकी एक विशालमूर्त्ति तय्यार की गई। इस मूर्त्तिकी ऊंचाई प्रायः ३६ फुट है। नारास्थानमें मूर्त्तिप्रतिष्ठा होनेके बाद मूर्त्तिपर एक मन्दिर तय्यार किया गया। मन्दिर दोबार अग्निसे भस्म हो गया था। तीसरीबार फिर मन्दिर तय्यार किया गया। तीसरीबारका तय्यार किया हुआ मन्दिर [illegible] दक्षिण जापानके नारास्थानमें आजतक मौजूद है। इस मन्दिरको जापानी तोदाइजीके नामसे पुकारते हैं। सन् ७९४ ई०में सम्राट् कोम्मूने क्योटोस्थानमें अपनी राजधानी तय्यार की। आज दिन [illegible] विशाल नगर बसा हुआ है [illegible] सन् ७९४ ई० [illegible] । सन् [illegible] ई० [illegible]

साथ विवाह देते थे। फूजीवारा घरानेद्वारा जितने जापानसम्राट् सिंहासनच्युत किये गये उनकी नामावली देखिये,—शिवा, फुजाकू, तोवा, रोकूजो, ताकातूरा, इश्रीजो, रोजी, इनिउ, काजान और गोनिजो। जापानके सिंहासनच्युत सम्राट् संसारसे उदासीन होकर संन्यासी बनकर बौद्धमठमें बैठ जाते थे। फूजीवारा घरानेकी यह राजदमनकारी शक्ति सन् १०५० ई० पर्य्यन्त रही।

इसीसमय जापानमें कुछ घराने ऐसे बन गये थे जिनके लोग लड़ाईमें अफसर बनाकर भेजे जाते थे। ऐसे घरानोंमें तायराघराना सर्व्वश्रेष्ठ समझा जाता था। सन् ८०६ ई०में जापान-सम्राट् काम्मूका घराना ही तायरा घरानेके नामसे प्रसिद्ध हुआ और इसी घरानेने क्रमश: उन्नति करके फूजीवारा घरानेकी शक्ति एकबार ही मिट्टीमें मिला दी। तायरा घरानेके साथ साथ जापानसम्राट् मिवाको मिनामोटो नामक बड़ी घराना भी क्रमश: शक्ति प्राप्त करता जाता था। इसी जगह और एक बात सुन लीजिये। फूजीवारा घरानेकी शक्ति घटने और सम्राट्की घरानोंकी शक्ति बढ़नेके साथ साथ

जापानी जाति दो भागोंमें विभक्त हो गई। एक तरहकी जाति मुल्की कामोंमें मशगूल हुई और दूसरी तरहकी जाति जङ्गी कामोंमें।

हम ऊपर लिख चुके हैं, कि तायरा नामक जङ्गी घराना क्रमशः उन्नति करके सर्व्वश्रेष्ठ जङ्गी घराना बन गया, किन्तु इस घरानेके साथ साथ मिनामोटो नामक जङ्गी घराना भी शक्तिसम्पन्न होता गया। तायरा घरानेकी शक्ति यहांतक बढ़ गई, कि उसने गोशिराकावा नामक मनुष्यको जापानका सम्राट् बना दिया। मिनामोटो घरानेको यह बात अच्छी नहीं मालूम हुई। उसने जापानसिंहासनके स्वत्वाधिकारी एक बालक राजकुमारका पक्ष ग्रहण करके तायरा घरानेके साथ युद्ध किया। तुमुल संघर्ष हुआ। मिनामोटो घराना परास्त हुआ विजयी तायरा घरानेका बल प्रबल हो गया। आगे तायरा-घरानेके एक प्रधानपुरुष कियोमोरी अपने घराने-द्वारा राजसिंहासनपर बैठाये गये सम्राट् गोशि-राकावाको सिंहासनसे उतारकर भी स्वयं जापान सम्राट् नहीं बना,—मंत्रीकी तरह राजकार्य्य करता रहा। इधर युद्धमें परास्त हुए मिनामोटो घराने

प्रधानपुरुष योरीटोमोने तायरा घरानेके साथ फिरसे युद्ध करनेकी तय्यारी की। किन्तु दूसरीबार युद्ध होनेके पूर्व्व ही तायरा घरानेके सर्व्वप्रधान और अपूर्व्व क्षमताशाली मन्त्री कियोमोरीने शरीरत्याग किया। कियोमोरीके मरते ही मिनोमोटोजातिका पथ परिष्कृत हुआ। उसने दूसरीबार तायरा घरानेके साथ युद्ध किया। यह युद्ध भी नितान्त भयङ्कर हुआ। इसमें तायरा-घराना पराजित हुआ। उसकी शक्ति बिलकुल टूट गई। मिनोमोटो-घरानेका प्रधानपुरुष योरीटोमो ही इस दूसरी लड़ाईका प्रधान नेता था। उसीकी कलाकौशलसे मिनोमोटोघरानेने सैन्य संग्रह किया था और उसीकी युक्तिसे तायरा घराना परास्त हुआ था। किन्तु स्वयं योरीटोमो सैन्यका बड़ा भाग लेकर एक दूसरी ओरसे जापान-राजधानीपर आक्रमण करनेके लिये अग्रसर हो रहा था। मिनोमोटो घरानेकी जिस फौजसे तायरा घरानेकी सैन्य पराजित हुई, वह सैन्य योरीटोमोके छोटे भाई योशीनाकाके अधीन थी। योशीनाकाने तायरा घरानेकी सैन्य परास्त करके जापानकी राजधानीमें प्रवेश किया और गोतोबा नामक [illegible]

पुरुषको जापानका सम्राट् बना दिया। साथ साथ आप सम्राट्का शोगन बन गया। जापान-भाषामें शोगनका अर्थ असभ्यजातिदमनकारी है। किन्तु यथार्थमें—शोगन—प्रधान सेनापतिकी मर्य्यादासूचक उपाधि है। सो योशीनाका शोगन बन गया। ७ वर्षके बालक जापान-सम्राट् गोतोबाको अपने हाथका खिलौना बना लिया। योरीटोमोका कुछ खयाल न किया। योरीटोमोने राज्यप्राप्तिकी चेष्टा की;—फललाभ किया योशीनाकाने।

योशीनाकाकी स्वार्थान्धतासे योरीटोमो नितान्त असन्तुष्ट हुआ। उसने अपने छोटे भाई योशिटसनेके नेतृत्वमें एक जबरदस्त फौज योशीनाकाको दमन करनेके लिये भेजी। बिवा झीलके किनारे योशिटसने और योशीनाकाकी फौजोंका घोर संग्राम हुआ। योशी-नाकाकी फौज परास्त हुई। जीवनोपाय न देखकर योशीनाकाने आत्महत्या कर ली। योशीनाकाके मरनेका हाल सुनते ही ताइरा घरानेका प्रधान सरदार मिउनेमोरी पञ्चम जापान-सम्राट् अनटोकु उसकी माता और कुछ सैन्यसहित राजधानी परि-त्याग करके इडजू टापूकी ओर भागा। परन्तु

सम्राट्का परिवार तथा उसके साथकी फौज प्रायः ५ सौ बड़ी बड़ी नावोंद्वारा हाण्डो-टापू और क्यूशू-द्वीपकी बीचवाली प्रणाली पार कर रही थी। योमिटस्न भी ससैन्य नावपर सवार हुआ। हाण्डोके शिमोनोसेकी गांवके सामने वारिधिवक्षपर दोनो ओरकी नावोंका सामना हुआ। घोर नौ-युद्ध उपस्थित हुआ। नौ युद्ध चल रहा था, ऐसेही समय पदच्युत सम्राट्की माता पदच्युत-सम्राट् अराटोकूको गोदमें लेकर समुद्रजलमें फाद पड़ीं और दोनो गभीर जलराशिमें निमग्न हुए। तायरा घरानेका प्रधान अफसर मिनेमोरी गिरफ्तार हुआ और मार डाला गया। इस नौ-युद्धसे तायरा घराना प्रायः नष्ट हो गया। जो लोग बच [illegible] क्यूशू टापूमें जाकर रहने लगे और उन्होंने जापानके अन्यान्य जातियोंसे मिलना जुलना छोड़ दिया। इस समय भी तायरा घरानेके लोग संसारमें मिलनेके [illegible] एकान्तवाससे अधिक प्रेम रखते हैं।

पूर्वकथित नौ युद्धके उपरान्त योरिटोमोका [illegible] आया। योरिटोमोको [illegible] और वीर [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

व्यवहार किया। योषिटसून हीने अपने भुजविक्रम और रणकौशलसे योरीटोमोके वैरियोंका नाश किया था। किन्तु योषिटसूनका पराक्रम ही योषिटसूनका वैरी हो गया। उसका पराक्रम देखकर उसका बड़ा भाई उससे ईर्षाद्वेष करने लगा। योषिटसून नौ-युद्धमें विजय प्राप्त करके और वैरियोंकी सैन्यसे छीनी हुई ध्वजा पताका लेकर अपने भाईसे मिलने चला। उस समयकी जापानराजधानी क्यूटोमें पहुंचकर अपनी फौजका पड़ाव डाला। योरीटोमो उस समय कामाकुरा नगरमें था। उसने क्यूटोमें ठहरे हुए योषिटसूनको लिखा,—"मेरे पास आनेकी जरूरत नहीं है वैरीकी ध्वजा पताका आदि कोषीगोई नामक नगरमें रख दो।" बड़े भाईका इतना गन्दा व्यवहार देखकर योषिटसून बहुत उदास हुआ। वह अपनी फौज छोड़कर कोषीगोई नगरके मानपूजी नामक मठमें चला गया। वहांसे उसने अपने बड़े भाईको चिट्ठीमें जवाब लिखा। जवाबका मर्म था,—"आपके स्वभावको जानके मैं नितान्त दुःखित हुआ हूं। मैं अपने लिये कुछ नहीं किया है। जो कुछ किया आपके लिये और आपकी आज्ञासे। नाना

कि आप मुझपर प्रसन्न होंगे। मुझे दर्शनके सौभाग्यसे वञ्चित न रखेंगे।" इस चिट्ठीका कोई फल नहीं हुआ। योशिटसून भाईके क्रोधसे भीत हुआ। वह भागकर अपने पुराने दोस्त हिडहिराके पास चला गया। फूजीवारा घरानेका हिडहिरा मत्सूका गवरनर था। हिडहिराने योशिटसूनको यत्नसहित अपने पास रखा। कुछ दिनके बाद हिडहिराने शरीरत्याग किया। उसका लड़का यासुहिरा मत्सूका गवरनर हुआ। यासुहिराने योरीटोमोको प्रसन्न करनेके लिये योशिटसूनको सन् ११८९ ई० में मार डाला। मरनेके समय योशिटसूनकी अवस्था प्राय ३० वर्षकी थी। योशिटसूनकी मृत्युका समाचार पाकर योरीटोमोने क्रुद्ध होनेका बहाना किया। अपने छोटे भाईके हत्यारे यासुहिराको दण्ड देनेके लिये एक छोटी सी फौज भी भेज दी। किन्तु स्वार्थान्ध योरीटोमो भीतर योशिटसूनकी मृत्युसे मन ही मन प्रसन्न हुआ था। योशिटसूनको मरे बहुत दिन बीते, जापानवासी आजतक उसे प्रतिष्ठापूर्वक याद किया करते हैं।

योशिटसूनकी मृत्युके उपरान्त योरीटोमो कुछ शंकित हो गया। वह [illegible]

राजधानी क्यूटोमें बालकसम्राट् गोतोबासे मि गया । सम्राट्ने योरीटोमोका धूमधामी किया । १ महीनातक जापानराजधानीमें जलसे होते रहे । इसके बाद योरीटोमो अपने प्यारे नगर कामाकुराको लौट गया । योरीटोमोने अपने मित्र ओइनोहिरोमोटोके सभापतित्वमें जापानशासनके लिये एक सभा स्थापित की । जापानदेशमें फौजदारी अदालतें खोलीं । जापान-सम्राट्से कह सुनकर अपने घरानेके ५ मनुष्योंको ५ प्रदेशोंका गवरनर मुकर्रर कराया । आगे, प्रत्येक प्रदेशके गवरनरोंके पास अपना एक आदमी रख दिया । ये आदमी गवरनरोंको जरूरी कामोंमें परामर्श दिया करते थे । काल पाकर इन आदमियोंकी शक्ति बढ़ गई और उन्होंने गवरनरोंके अनेक स्वत्व स्वाधीन कर लिये । सन् ११९० ई० में जापानसम्राट्ने योरीटोमोको शोगनकी पदवी प्रदान की । शोगन-पदवी मिलनेके साथ साथ योरीटोमोकी अधिकारवृद्धि हुई । योरीटोमोने अधिकार पाकर जापानदेशका उपकार किया । प्रसङ्गवश एक बात याद आ गई । कैमफर नामक फरांसीसी इतिहास-लेखक अपनी,—"हिष्टरी हैज़् इम्पायर डू जापोन" नामकी पुस्तकमें जापानकी

शोगनोंका हाल प्रकाश करता हुआ लिखता है,—"जापानमें दो तरहके सम्राट् होते थे। एक सम्राट् दूसरा शोगन-सम्राट्। दोनोंके अधिकार समान होते थे।" किन्तु अङ्गरेजीमें लिखे गये अनेक जापान-इतिहासों और जापानीभाषाके नेहाङ्गी आदि इतिहासके अङ्गरेजीभाषान्तरोंके पढ़नेसे शोगन और जापान-सम्राट्के अधिकारोंकी समानता प्रकट नहीं होती है। पहले दरजेकी शक्ति जापान सम्राट्में और दूसरे दरजेकी शक्ति शोगनमें समझी जाती थी। अवश्य ही शोगन समस्त जापानवासियों की अपेक्षा श्रेष्ठ और शक्तिशाली होता था। प्रजापर इनका बड़ा प्रभाव रहता था—सम्राट् पर भी इनके प्रतिष्ठित पदका असर होता था। अनेक शोगन इस असरको बढ़ानेकी चेष्टा करके बढ़ा भी लेते थे। अनेक इसको अनुचित रीतिसे बढ़ाते थे। पार्थिव सुखोंकी [illegible]-ती अवश्य मनुष्यका मन मतवाला बना देती है—इस महापरीक्षामें पड़कर मनुष्यका चित्त प्रायः चञ्चल हो जाता है—प्रभुता पाकर धीर गम्भीर विचारवान् पुरुषोंको भी मद आ जाता है।

[illegible] सन् [illegible] ई० के जापानका [illegible]

षष्ठ परिच्छेद।

योरीटोमोकी मृत्युके उपरान्त हीसे जापान-साम्राज्यको निर्बल बनानेवाले काम आरम्भ हो गये। योरीटोमोके उपरान्त उसका अष्टादश वर्षीय पुत्र योरी जापानका शोगन बनाया गया। योरी विलासी लक्ष्यभ्रष्ट और आलसी था। होजो टोकीमासा नामक योरीका नाना योरीके पदका काम करने लगा। योरी नाममात्रके लिये शोगन था। होजोटोकी-मासा शोगन नामधारी न होनेपर भी प्रकृत शोगन था। कुछ दिनोंके बाद योरी भयङ्कर रूपसे रोगा-क्रान्त होनेकी वजह किसी काम लायक न रहा। योरीके नानाने अपनी बेटी वा योरीकी मातासे सलाह करके योरीके छोटे भाई सिन्तन और योरीके द्वादश वर्षीय लड़के इचिमानको शोगनपद दिल-वाना चाहा। योरीने पहले अपने नानाकी सलाह मञ्जूर नहीं की। अन्तमें नानाके दबावमें पड़कर योरीको यह बात मान लेना पड़ी। इसीसे योरीसे छिनके शोगनका दाखिलखूर्द नाम दे लिया

गया। हृदय-भग्न—निकम्मा योरी,—किसी बौद्ध-मठमें बैठकर अपनी जिन्दगी काटने लगा। योरीका छोटा भाई सानेटोमो शोगन बना। हतश्री योरी बौद्धमठमें भी चैनसे बैठने न पाया। उसके न टोकीमासाने उसको कत्ल करा दिया। हम अब योरीके पुत्र इचिमानका वृत्तान्त ऊपर लिख आ दिं। इचिमानने दुर्भाग्यपरतन्त्र होकर अपने चचा याने शोगन सानेटोमोकी हत्या की। अति भयङ्कर फल उत्पन्न हुआ। चचाकी हत्याके अपराधमें राजाज्ञाद्वारा इचिमानका सिर सन् १२१८ ई०में कलम करा दिया गया। साथ साथ अद्भुतकर्मा शोगन योरीटोमोका वंश निर्वंश हुआ। प्रचण्ड प्रतापवान योरीटोमोने अपने घरानेका मार्त्तण्ड उदित किया था—अभागे बालक इचिमाने उसको चिरकालके लिये अस्त कर दिया :—

"किसीको रफअत किसीको पस्ती, सराञ्जा दम नारोबार देखा।"

अपनेको सन्ततिविहीना पाकर योरीटोमोकी विधवा स्त्री कैसा-गोने जापान-सम्राट् ... नाम लेकर फूजीवारा घरानेके योरिटसन नामक

२ वर्षके शिशुको शोगन बनाया। शिशु शोगन राज्य-
कार्य्य कैसे करे? सो शिशु शोगनकी जगह राज्यकार्य्य
करनेके लिये ४।५ मनुष्योंकी एक समिति स्थापन की
गई। समितिके प्रधान मनुष्यका नाम रक्खा गया होजो।
काल पाकर होजो लोगोंने शक्ति बढ़ाई—प्रभाव
बढ़ाया। जापान-सम्राट्पर भी उनका प्रभाव पड़ा।
जिसको चाहते थे जापान-सम्राट् बना देते थे और
इच्छा होते ही जापान-सम्राट्को सिंहासनच्युत कर देते
थे। अपनी शक्ति अक्षुण्ण रखनेके लिये लड़कोंको
जापान-सम्राट् बनाते थे। जब बालक सम्राट् समय
पाकर वयःप्राप्तिके समीप पहुंचते थे, तो उन्हें वे
सिंहासनसे उतारकर किसी दूसरे बालकको जापान-
सम्राट् बना देते थे। अपना अधिकार कायम रखनेके
लिये वे शोगनोंके साथ भी ऐसा ही व्यवहार करते थे।
बालक शोगनको वयोवृद्ध नहीं होने देते थे। जो
बालक शोगन बचपन बिताकर युवावस्थामें पदार्पण
करता था उसे या, तो मरवा डालते थे और या पद-
च्युत कर देते थे। उसकी जगह किसी बालकको
शोगन बना देते थे। होजो लोगोंकी नालायकीसे
जापानका राज्यकार्य्य बहुत खराब हो गया। इनमें

क्रोधके मारे लाल हो गया। सन् १२८१ ई०में एक लाख चीनी सिपाही प्रायः ३ सौ जङ्गी नावोंद्वारा जाकर जापानके क्यूशू टापूमें उतरे। इसी टापूपर चीन-जापानका घोर संग्राम उपस्थित हुआ। चीनी सिपाही परास्त हुए। उनकी जङ्गी नावोंका बेड़ा भी प्रचण्ड तूफानमें पड़कर नष्ट हो गया। जापानकी अन्तरस्थ अवस्था खराब रहनेपर भी जापानियोंने बाहरी शत्रुके साथ दिल खोलकर युद्ध किया और अपने देशको विदेशियोंके हाथमें पड़नेसे बचाया।

जापानका बाहरी झगड़ा खतम हो गया, पर भीतरका झगड़ा चलता रहा। सन् १३१८ ई०में गोडायगो नामक जापान-सम्राट्ने होजो लोगोंको दबाना चाहा। होजो दबे नहीं उलटा इतने जबर-दस्त बन गये, कि सम्राट् गोडायगोको अपना सिंहासन तोड़कर ओकी टापूमें भाग जाना पड़ा। होजोने गोडायगोकी जगह गोकोगेन नामक मनुष्यको जापान-सम्राट् बना दिया। उधर पदच्युत सम्राट् गोडायगोने २ सेनापतियोंकी अधीनतामें एक विशाल सैन्य एकत्र की और चढ़ाई करके जापान राजधानी क्यूटोपर कब्जा लिया। गोडायगो पुनः फिर जापान-सम्राट

हुआ। इस सम्राटने होजो घरानेका सर्व्वनाश
होजो पद मिटा दिया। आगे सम्राट्
तीन प्रधानसेनापतियोंसे आषिकागा नामक
राजद्रोही बन गया। सम्राट् और
फौजोंमें लड़ाई हुई। सम्राट् हार गया और
सम्राट्चिन्हों सहित क्यूटोसे भागकर क्यूटोकी
ओरके पार्व्वत्यप्रदेशमें निवास करने लगा।
सेनापति आषिकागाने अपनेको शोगन बनाया
कोमियोटेन्नो नामक मनुष्यको जापानसम्राट्।
१३५८ ई॰में आषिकागाका स्वर्गवास हुआ।
उपरान्त आषिकागाके घरानेके लोग
शोगन हुए। आषिकागाके पोते शोगन यो
मित्सूको चीनसम्राट्ने जापाननरेशकी
दी थी। योशीमित्सूने भी चीनसम्राट्
प्रतिवर्ष सवा २१ सेर सुवर्ण देना शुरु
था। हम ऊपर लिख आये हैं, कि सम्राट् डाय
जापानके सम्राट्चिन्हों सहित क्यूटोकी दक्षिण
पार्व्वत्यप्रदेशमें भाग गया था। इधर क्यूटोमें
नवीन सम्राट् बनाया गया था। जो उधर सम्रा
चिन्होंको अपने पास रखनेकी वजह सम्राट् गोडायगो

रानेके लोग भी अपनेको जापानसम्राट् समझते थे।
स तरहसे जापानमें २ सम्राट् हो गये थे।
तेगन योशीमत्सूने दोनो सम्राटोंको मिला देना
ाहा। उसके खूब परिश्रम करनेपर सम्राट् डाय-
ोके घरानेके कामीयामा नामक नाममात्रके सम्राट्ने
न १३९२ ई०में क्यूटोमें आकर जापानसम्राट् गोको-
ात्सूको अपने पासके सम्राट्चिह्न दे दिये। जापानमें
२ सम्राट् रहनेका झगड़ा खतम हो गया।

इन दिनों जापानदेशकी दशा बहुत खराब हो
ई थी। जापानके नालायक शासकोंकी वजह
दिनों दिन देशका अधोपतन हो रहा था।
जापानके रोजगार क्रमशः नष्ट होते जाते थे।
जापानके कृषकगणने खेती बारी छोड़ दी थी।
हथियार फसलें लड़नेवाली फौजोंके पैरोंसे नीचे
कुचली जाती थीं। हत्या, डाके, और चोरियोंने
जोर पकड़ लिया था। सब आदमियोंको धन-
रक्षा और प्राणरक्षा करना कठिन हो गई थी। रईस
कंगाल बने—लुटेरे धनाढ्य हुए। कहांतक कहें,—
इस समय जापानसम्राट्तकको खर्चेकी तंगी
पड़ने लगी। सन् १५०० ई० में जापानसम्राट्

गोसूची मेकाडोका स्वर्गवास हुआ। उस हम सम्राट्का खजाना इतना खाली था, कि जापानसम्राट्की लाशकी अन्तिमक्रिया बहुत दिनोंतक रुकी रही। सिर्फ अर्थाभावके कारण ४० दिनोंतक जापानसम्राट् गोसूची मेकाडोकी लाश राजप्रासादमें पडी रह गई थी।

सप्तम परिच्छेद।

सो आशिकागा घरानेवाले शोगनोंके जमानेमें जापान-साम्राज्य दिनोंदिन रसातलको चला जाने लगा था। ऐसे ही समय—याने सन् १३४२ ई०में पुरतगाली लोग पहले पहल जापानमें गये। मलाया प्रायद्वीपके समीप मोलक्काज नामक द्वीपसमूह है। पहले इसपर पुरतगालका अधिकार था। आजकल उसका कबजा है। उस समयके मोलक्काजका गवरनर गालवानो ही पहले पहल जापानमें गया था। गालवानोने प्रकट किया था, कि हमारे जहाजके ३ मनुष्य भागकर जापानमें चले गये थे: उन्हींको पकड़नेके लिये हमने जापानप्रवेश किया था। किन्तु जापान-इतिहासमें उन तीनों कैदियोंका कुछ हाल नहीं लिखा है। इसी कारण हम यह बतानेमें असमर्थ हैं, कि पुरतगाली गवरनर गालवानोने कैदियोंकी बात सच कही थी या नहीं।

इस घटनाके ७ वर्ष बाद—याने सन् १५४९

ई०में पिण्टो नामक पुरतगाली अपने कई साथियों-सहित जापान—क्यूशू-टापूके दक्षिणीय भागमें टेनेगाशिमा स्थानमें जहाजसे उतरा। टेनेगाशिमाके राजाने पिण्टोका खूब सम्मान किया। पिण्टोने राजाको एक तोड़ेदार बन्दूक भेटमें दी और बारूद बनानेकी हिकमत भी बता दी। पिण्टो जापानमें प्रायः साढ़े पाँच महीनेतक रहा। उसके रवाना होनेके समय टेनेगाशिमामें प्रायः ६ सौ तोड़ेदार बन्दूकें तय्यार हो गई थीं। कुछ ही वर्षोंके उपरान्त पिण्टोको विदित हुआ, कि जापानके समस्त भागमें तोड़ेदार बन्दूकें बनने लगी हैं और प्रायः प्रत्येक जापानीके पैरमें ये आग्नेय अस्त्र मौजूद हैं। टेनेगाशिमाने पिण्टोको अपने सम्बन्धी राजा बङ्गोके पास भेज दिया। पिण्टोने बङ्गोनरेशको गठियारोगसे आरोग्य किया। बङ्गोका राजकुमार तोड़ेदार बन्दूकके फटनेसे जल गया था। उसको भी आरोग्य किया। पिण्टोको इन कामोंके बदले बङ्गोनरेशने प्रचुर प्रमाणमें सुवर्ण प्रदान किया था। पिण्टो सुवर्ण लेकर जापानसे चला गया। फिर सन् १५५० ई०में जापानमें गया। इसवार वह बहुमूल्य सौदा

गरीकी चीजें भी लेता गया। सौदागरीका माल बेचकर और प्रचुर अर्थ सञ्चित करके उसने फिर जापान परित्याग किया। दूसबार २ जापानी भगेलोंको भी अपने साथ लेता गया। पिण्टो मलाया प्रायद्वीपके मलाका नामक नगरमें पहुंचा। वहां पुरतगाली पादड़ी जावियरसे उसकी मुलाकात हो गई। पिण्टोने जावियरको दोनो जापानी भगेले दे दिये। जावियरने उन्हें ईसाई बना लिया। सन् १५४८ ई०की १५ वीं अगस्तको जावियर दोनो जापानी ईसाई और २ पादरियोंके साथ जापानके सत्सुमा प्रदेशकी राजधानी कागोशिमामें पहुंचा। महाराज सत्सुमाने जावियर और उनके साथियोंको सम्मानपूर्वक अपने देशमें रखा। अपनी राजधानीमें जावियरको ईसाई धर्मका उपदेश देनेकी आज्ञा भी दी। इसी समय पुरतगा-लके अनेक सौदागरी जहाज हिरडो-टापू और सत्सुमा-प्रदेशकी राजधानी कागोशिमानगरके बन्दरगाहमें पहुंचे। इन जहाजोंका विलायती माल खरीदकर जापानी बहुत प्रसन्न हुए। कुछ दिनोंके उपरान्त कागोशिमा-बन्दरगाहके जहाज हिरडो टापूकी ओर रवाना हुए। जहाजोंके चले जानेसे महाराज सत्सुमा

जावियरपर क्रुद्ध हुए और उसको अपने प्रदेश
निकल जानेकी आज्ञा दी। जावियर फिरडो
और फिरडो-नरेशकी आज्ञासे उसने वहां एक गि
बनाया। इसके उपरान्त जावियर जापानके प्र
टापू हांडोमें गया और वहांसे जापानकी राज
क्यूटोमें पहुंचा। राजकर्मचारियोंकी नालायकी
बजह क्यूटोमें उस समय बहुत हलचल मची थी
जावियरको अपना धर्मोपदेश देनेका मौका न मिल
वह वहांसे लौटकर बङ्गोद्गिममें पहुंचा और २ बर
महीनेतक जापानमें रहकर सन् १५५१ ई॰की २॰
नवम्बरको एक जहाजद्वारा चीनकी ओर रव
हुआ। राहमें जहाज हीपर जावियर मर ग
जावियर मर गया, किन्तु जापानमें वह अपने ह
शिष्य और दो पादड़ियोंको छोड़ गया। जावि
जापानमें ईसाई धर्मकी नींव दे आया—इन
ईसाई उस नींवपर फ्लोरन्यपरिचकद्वारा इमार
तयार करते रहे। जावियरकी मृत्युके उपरा
[illegible] ईसाई हो गया। इसने अपने प्र
[illegible] नागासाकी बन्दर ईसाइयोंके [illegible] और ना
और [illegible] दे दिया। यह बन्दर [illegible]

है। इससे पुरतगालके बड़े बड़े सौदागरी जहाज भी सरलता-पूर्व्वक प्रवेश कर सकते थे। सन् १५७२ ई०में नागासाकी नगरके प्रायः समस्त निवासी ईसाई हो गये। बुद्धमन्दिर तोड़े गये। उनकी जगह गिरजे तय्यार किये गये।

एक ओर ईसाई लोग इस प्रकार जापानमें अपना प्रसार कर रहे थे—दूसरी ओर जापानमें नवनाग नामक मनुष्य क्रमशः प्रबल होता जा रहा था। नवनागका सम्बन्ध तायरा घरानेसे था। ओवारी प्रदेशमें उसके पिताकी जागीर थी। अपने पिताकी मृत्युके उपरान्त सन् १५४८ ई०में नवनाग अपने पिताकी जागीरका मालिक बना। नवनाग दृढ़प्रतिज्ञ और अत्यन्त वीर पुरुष था। उसका अन्तःकरण कुसुमवत कोमल था—किन्तु उसका आकार तेजोमय और भयङ्कर था। वह सबपर सरदारी किया चाहता था। अनेक लोग उसके हृदयकी कोमलताको न जानकर उसके स्वरूप और उसकी ऊपरी बातोंसे असन्तुष्ट ही रहा करते थे। अपने पिताकी मृत्युके उपरान्त नवनाग अपने पड़ोसी जागीरदारोंकी जागीरोंपर कब्जा करके अपनी जागीर बढ़ाने लगा। किन्तु

समय नवनाग क्रमशः बलिष्ठ और प्रसिद्ध होता जाता था, इस समय ओकीमाची जापानका सम्राट् था और आशिकागा घरानेका योशीफ़ुमी जापानका शोगन। दोनो नवयुवक थे—दोनो नातरजबेकार और निकम्मे थे। जापानसाम्राज्यके प्रत्येक प्रदेशके राजे महाराजे स्वतन्त्र हो गये थे और आपसमें खूब लड़ा झगड़ा करते थे। सन् १५५८ ई०में नवनागने अपनी जागीर बहुत दूरतक बढ़ा ली थी। सिबाता कतटोहू और काकूमाईमन नवनागकी फ़ौजके सेनापति थे और विख्यात हिडियोशी नवनागका प्रधानसेनापति था। सन् १५६७ ई० में शोगन योशीतिरी अपने एक नौकरद्वारा मार डाला गया। योशीतिरीके छोटे भाई योशीयाकीने शोगन-पद प्राप्त करना चाहा। लोगोंने बाधा दी। योशीयाकीने शोगन बननेमें नवनागकी सहायता पानेकी प्रार्थना की। दूरदर्शी शोगनने योशीयाकीकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और चेष्टा करके इसको शोगन बना दिया। योशीयाकीने इसके बदलेमें नवनागको नायबशोगन मुक़र्रर किया। नवनागके प्रसिद्ध सेनापति हिडियोशीको जापानी फ़ौजोंका प्रधानसेनापति बना दिया।

सम्राट् ओगीमाधीने सन् १५७० ई०के दिसम्बर मासमें नववर्षोत्सव करनेकी विज्ञप्ति दी। उस समयकी जापानराजधानी क्यूटो नगरी खूब सुसज्जित की गई। इसी उत्सवपर नवनाग बहुत बड़ी फौजके साथ राजधानीमें गया। उन दिनों एचिजनप्रदेशका महाराज असाकुरायोशीकेग जापान-सम्राट्के विरुद्ध था। नववर्षोत्सवसे निवृत्ति लाभ करके नवनागने एचिजनप्रदेशपर चढ़ाई की। महाराज असाकुरा-योशीकेगको परास्त किया। असाकुरा भागा। ऐसे ही समय ओसाका-प्रदेशमें अशान्तिके लक्षण दिखाई दिये। नवनाग अपनी फौजसहित ओसा-कामें शान्तिस्थापन करने चला गया। इधर मैदान खाली देखकर एचिजन-प्रदेशके भगेहे महाराजने एक बड़ी फौज तय्यार करके राजधानी क्यूटोपर चढ़ाई की। एनरियाकूजी नामक मठके महन्त नवनागसे नाराज थे। उन लोगों-ने असाकुराको सहायता दी। किन्तु असाकुराकी चढ़ाईका हाल नवनागको तत्क्षण पहुंच गया। असाकुराकी सैन्य क्यूटोतक पहुंचने न पाई थी, कि नवनाग अपनी फौजसहित क्यूटोमें पहुंच गया

भयङ्कर युद्ध हुआ। अन्तमें असाकुराकी सैन्य ध्वस्त विध्वस्त हो गई और उसको झक मारकर नवनागसे सन्धि कर लेना पड़ी। इधर नवनागने एनरियाकू-जीके महन्तोंको असाकुराकी सैन्यको सहायता देनेके बदलेमें कठोर दण्ड दिया। सहस्र सहस्र महन्त कटवा दिये और उनके सुदृढ़ मठोंको तोड़ फोड़कर धराशायी बना दिया।

इसके उपरान्त नवनागने अनेक राजविरोधी राजों महाराजोंका गर्व्व खर्व्व किया। सन् १५७८ ई०में नवनागने अपने प्रधान सेनापति हिदियोशीको महाराज चोसुको अधीन करनेके लिये भेजा। ५ वर्ष-पर्य्यन्त अविराम युद्ध हुआ। अन्तमें महाराज चोसु टाकामत्सु नामक किलेमें घिर गया। टाकामत्सु किलेको खन्दकके भीतर एक नदी बहती थी। हिदि-योशीने इस नदीका जल नीचे किसी जगह रोक दिया। इसप्रकार रुकनेसे किलेके गिर्द बहुत जल जमा हो गया और वह जल क्रमशः बढ़कर दुर्गमें अन्दर आकर उपस्थित करनेकी धमकी देने लगा। इसी मदद हिदियोशीने नवनागको बुलाया। नवना-गने सेनापति अकेचीको [illegible] फौज लेकर

क्यूटोसे टाकामत्सू दुर्गकी ओर रवाना हुआ। नव-नागने एकबार दिल्लगीकी राहसे सेनापति अकेचीके शिरपर २।४ चपतें लगा दी थीं। उसी समयसे अकेची गुप्तरीतिसे नवनागका जानी दुश्मन बन गया था। नवनाग थोड़ेसे शरीररक्षक सिपाहियोंके साथ फौजके पीछे पीछे चल रहा था। एक रातको वह हन्वजीके मन्दिरमें ठहर गया। अकेचीको यह बात मालूम हुई। उसने अपनी फौजसहित जाकर हन्व जीका मन्दिर घेर लिया। नवनागको पकड़कर मार डालनेकी चेष्टा की। उधर नवनागने प्राणरक्षाका कोई उपाय न देखकर आत्महत्या कर ली। इस प्रकार सन् १५८२ ई०में नवनागका प्राणान्त हुआ।

नवनागकी अकाल मृत्युसे देशमें हाहाकार मच गया। नवनागके संसारत्याग करनेपर जापान नव-नागके सर्वप्रधान सेनापति सुयोग्य हिदियोशीको आशादृष्टिसे देखने लगा। शाकुमा और शिबाता नामक दो मनुष्य हिदियोशीके वैरी थे। दोनों प्रति-पक्षियों [illegible] [illegible] [illegible] सेनापति भी रह चुके थे। अकेची इन दोनोंसे [illegible] हिदियोशीका वैरी था। [illegible] [illegible] [illegible] न

परलोकगामी हुए हैं। यदि उनके आगमनभयसे भीत होकर आपने हार मान ली हो, तो आप अपनी हार लौटा लीजिये। मैं किलेके बाहर निकल जाता हूं। आप उसका द्वार बन्द करके फिरसे युद्ध आरम्भ कीजिये।" महाराज मोरीटेरुमोटो अपने पहले कामपर कायम रहा। उसने हिडियो-शीसे सन्धि कर ली। हिडियोशी इस ओरसे निश्चिन्त हुआ। अब उसने नृशंस बागियोंकी ओर ध्यान दिया।

हिडियोशी अपनी फौज लेकर ताकामत्सू दुर्ग-परित्यागपूर्व्वक क्यूटोकी ओर रवाना हुआ। हिडि-योशीको राजधानीमें पहुंचनेकी बहुत जल्दी थी। उसने अपनी फौज पीछे छोड़ी और कुछ शरीररक्षक सवारोंको साथ लेकर क्यूटोकी तरफ मारामार रवाना हुआ। राहमें और जल्दी की। जल्दीके सबब इसके शरीररक्षक सवार भी पीछे छूट गये। हम ऊपर लिख आये हैं, कि नृशंस बागियोंने अपने [illegible] हिडियोशीकी हत्याके लिये नियुक्त किये थे। वे दोनों अपना काम पूरा करनेका मौका ताक रहे थे। हिडियोशीके [illegible] शरीररक्षक [illegible] [illegible] पीछे छूट गये हैं [illegible] दोनोंने तलवार [illegible]

करके मारडालनेकी चेष्टा की। हिदियोशी जान लेकर भागा। इस समय हिदियोशीकी बुद्धिने उसके प्राण बचाये! नहीं, तो स्वामिभक्त हिदियोशी भी अपने स्वामीकी तरह अकालमृत्युको प्राप्त होता।

हिदियोशीके सामने पानीसे भरे हुए चावलके खेत थे। दो खेतोंके बीचसे एक पतली पगडण्डी खेतकी दूसरी ओरके एक मठद्वारतक गई थी। हिदियोशीने इसी पगडण्डीपर घोड़ा भगाया और पगडण्डीके छोरपर पहुंचकर वह घोड़ेसे उतर पड़ा। आगे घोड़ेके पैरमें खञ्जर भोंक दिया, जिससे वह तिलमिलाकर उलटा भागा। इस उलटे भागते हुए घोड़ेने हिदियोशीका पीछा करनेवाले दोनो लफ्टिनण्टोंकी राह कुछ देरके लिये रोक दी। इस अवसरमें हिदियोशी भागकर मठमें घुस गया। मठके महन्त उस समय एक मठस्थ सरोवरमें स्नान कर रहे थे। हिदियोशीने महन्तोंसे संक्षेपमें अपना कष्ट सुनाया और उनका कृपाकांक्षी हुआ। महन्तोंकी अनुमतिसे वह अपने कपड़े उतारकर उन्हींके साथ सरोवरमें घुसकर स्नान करने लगा। हिदियोशीके शत्रु पीछा करते-करते उस मठमें आये, तो उन्होंने हिदियोशीको

स्नान करता हुआ महन्त समझा और हिडियोशीको तलाशमें आगे बढ़ गये। इस प्रकार इस भीषण चक्रसे हिडियोशीकी जीवनरक्षा हुई।

हिडियोशीने टोकियोमें पहुंचकर नवनागके मित्र महाराजोंको एकत्र किया। नृशंस अकेशीपर चढ़ाई करनेकी तय्यारी की। अनेक महाराजोंसहित हिडियोशी अकेशीसे नवनागके खूनका बदला लेने चला। क्यूटोनगरसे कुछ फासलेपर योडो स्थानमें हिडियोशी और अकेशीकी फौजोंमें लड़ाई हुई। अकेशीकी फौजें हारीं। अकेशी भागकर अपने किलेकी तरफ रवाना हुआ। राहमें एक किसानने उसको पहचान लिया। किसानने देश-हितैषी नवनागके हत्यारे अकेशीपर बांसकी बरछीसे आक्रमण करके उसको घायल और अशक्त बना दिया। अकेशीने बचनेका कोई उपाय न देखकर आत्महत्या कर ली। अकेशीका शिर उसके आगे आया। उसने नवनागकी आत्महत्या कराई थी—अन्तमें उसको भी आत्महत्याकी भयङ्कर लज्जत चखनी पड़ी। अकेशीका शिर काटा गया। वह शिर नवनागके आत्महत्या-स्थान हन्नाईके कब्रिस्तानपर रखा गया।

पुरुषोंको हिडियोशीकी अधीनता स्वीकार करना पड़ी। हिडियोशी जापान-सरकारका उच्चकर्म्मचारी बना चाहता था। उच्चकर्म्मचारी बनकर अपने लड़कोंके लिये सरकारी ऊंची नौकरियोंका पथ परिष्कृत किया चाहता था। उसने पदच्युत शोगन योशियाकीसे कहा, कि तुम मुझको अपना दत्तकपुत्र बना लो। पदच्युत शोगनका दत्तकपुत्र बनकर वह स्वयं शोगन बना चाहता था। किन्तु योशियाकीने हिडियोशीकी बात स्वीकार नहीं की। जापान-सरकारने हिडियोशीकी कांक्षा मालूम की। सम्राट् ओगीमाचीने सन् १५८५ ई० में हिडियोशीको कूआम्बकूका बहुत ऊंचा पद प्रदान किया। अभीतक यह सम्मानसूचक पद सिर्फ़ फूजीवारा घरानेवालोंको मिलता था। सन् १५८६ ई० के बाद कुछ वर्षोंतक जापानमें बहुत शान्ति रही। इस समय हिडियोशी सम्राट्की ओरसे जापानके जागीरदारोंसे नवीन नियमोंपर सन्धि कर रहा था। इसी समय हिडियोशीने ओसाका नामक स्थानमें अपना एक विशाल दुर्ग तय्यार कराया था।

[illegible] नामक एक मन्दिर है। [illegible]

पहुंचनेपर इस फौजमें ८० हजार सिपाही हो गये। सन् १५८७ ई० की २२ वीं जनवरीको हिडियोशी भी ओसाकासे क्यूशू-टापूकी ओर रवाना हुआ। इसके पास १ लाख ३० हजार सिपाही थे। महाराज सत्सुमाको फौजको अपने देशके दुरारोह पर्व्वतों और सघन-वनोंपर बहुत घमण्ड तथा भरोसा था। किन्तु हिडियोशीने जासूसों द्वारा सत्सुमाप्रदेशका भूगोल अच्छी तरह जान लिया था। महाराज सत्सुमाकी सैन्य हर जगह परास्त होने लगी। परास्त होती हुई सैन्य अपनी राजधानी कागोशिमाके किलेकी तरफ पीछे हटने लगी। अनेक बड़ी लड़ाइयोंके बाद महाराज सत्सुमाकी सैन्य एकबार ही परास्त हो गई और उसने कागोशिमाके किलेमें घुसकर किलेका द्वार बन्द कर लिया। हिडियोशी चाहता, तो कागोशिमाका किला सहजमें फतह कर लेता। महाराज सत्सुमाको उसकी गुस्ताखीका मजा चखाता। किन्तु उसने अपनी स्वाभाविक उदारतावश सत्सुमाके महाराजको पदत्याग करनेपर बाध्य किया। उसके लड़केको सत्सुमाका महाराज बनाया। आगे महाराज सत्सुमाने जिन प्रदेशोंको जबरदस्ती छीन

लिया था, उन्हें लेकर उनके प्रकृत स्वत्वाधिकारियोंके हवाले कर दिया।

हिडियोशी धर्म्मकर्म्मपर उतना अनुराग नहीं रखता था। वह पुरतगाली पादरियोंसे भी ज्यादा सन्तुष्ट नहीं रहता था। हिडियोशीका ढङ्ग देखकर पुरतगाल-सम्राट ग्रेगरी त्रयोदश भीत हुआ। उसने समझा, कि जापानियोंके रुष्ट हो जानेसे जापानमें पुरतगाली व्यापारको बहुत क्षति पहुंचेगी। इस कारण उसने सन् १५८५ ई० में एक आज्ञापत्र निकाला जिसका मर्म्म यह था, कि कोई पादरी जापानमें न जाय। पुरतगाल-नरेशकी इस आज्ञासे युरोपके अन्य ईसाई राज्योंमें बहुत उत्तेजना फैल गई और युरोपके भिन्न भिन्न प्रान्तोंके अनेक पादरी जापानमें गये। एक बार किसी विलायती जहाजका कप्तान आपसमें लोगोंसे बातें कर रहा था। एक जापानी शासकने उसकी बातें सुन लीं। कप्तान कहता था—"हमारे सम्राट इस देशमें पादरियोंका दल भेजा है। वह यहांके निवासियोंको ईसाई बनाकर अपने वशमें कर लेगा। इसके उपरान्त हमारे सम्राट् यहांके देशी ईसाइयोंकी सहायताके लिये फौजें भेजकर देशपर अपना अधिकार

जमा लेंगी।" चीन, भारत और ईष्ट इण्डीजमें भी ऐसी ही घटना हुई थी। इतनी नजीरें कप्तानकी बात पुष्ट करनेके लिये यथेष्ट थीं। हिडियोशीने यह खबर पाते ही सन् १५८७ ई०में एक आज्ञापत्र निकाला। उसमें लिखा था, कि जापानसाम्राज्यमें जितने विलायती पादरी हैं, वे सब २० दिनोंमें जापान परित्याग कर दें। २० दिनोंके बाद जो पादरी जापान-सीमामें पकड़ा जावेगा, उसको मृत्यु-दण्ड मिलेगा। पुरतगालके सौदागरी-जहाजोंको जापानमें आनेकी आज्ञा दी गई थी। किन्तु यह नियम बना दिया था, कि जिस सौदागरी-जहाजपर कोई पादरी जापानमें आवेगा, उस जहाजके मल्लाह, कप्तान आदि जानसे मारे जावेंगे और वह जहाज माल असबावसहित जापान-सरकार जब्त कर लेगी। इस आज्ञाके उपरान्त भी अनेक पादरियोंने जापान परित्याग नहीं किया। सन् १५८३ ई०में ९ पादरी गिरफतार किये जाकर नागासाकीमें पहुंचाये गये। वहां वे आगमें भस्म कर दिये गये। जापान-सरकारकी ओरसे पहले पहल यही ईसाई-हत्या हुई। सन् १५८६ ई०में हिदेयोशीने नागासाकी बन्दरपर जापान-सरकारका

अधिकार फैला दिया। वहां एक नया गवरनर मुकर्रर कर दिया। इसके कुछ ही दिनों बाद हिदियोशीने नागासाकी बन्दरमें विलायती सौदागरोंको जहाज आनेकी आज्ञा दी।

इसके उपरान्त हिदियोशीने अनेक स्वतन्त्र नरेशोंको जापान-सरकारके अधीन किया। जिस नरेशने अधीनता स्वीकार करनेमें आपत्ति की, उसको युद्धमें परास्त करके अपना मनोरथ पूर्ण किया। महाराज शोगवारा जापान-सरकारकी अधीनता स्वीकार नहीं किया चाहते थे। सरकारी फौज और महाराजकी सैन्यमें बहुत दिनोंतक लड़ाई चली। अन्तमें शोगवारा-प्रदेशका पतन हुआ। महाराज शोगवारा मारे गये। हिदियोशीने यह प्रदेश अपने होनहार सेनापति इयासूको प्रदान किया।

बहुत दिनोंतक राज्यकार्य्य करते करते हिदियोशी थक गया। उसने काम्बाकूपद परित्याग किया। कुछ दिनोंतक विश्राम करना चाहा। किन्तु जापान-वासियोंने [illegible] हिदियोशीको निकम्मा न बैठने दिया। [illegible] सन् १५८१ ई०में [illegible] [illegible] [illegible] हो। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

चढ़ाई करनेकी इच्छा हिडियोशीके मनमें बहुत दिनोंसे थी। हिडियोशीने एकबार नवनागसे कहा था, "मैं कोरिया और चीनपर चढ़ाई किया चाहता हूं। जापान, कोरिया और चीन तीनो राज्योंको एक ही बन्धनमें बांधा चाहता हूं। अवश्य ही जापान ही इन दोनो साम्राज्योंपर प्रभुता करेगा।" हिडियोशीने कोरियापर चढ़ाई करने हीके ध्यानसे—कोरियाके समीपवाले क्यूशू-टापूपर अपना दखल जमा लिया था।

सन् १५८२ ई०में हिडियोशी कोरियापर चढ़ाई करनेका बहाना ढूंढने लगा। पाठकोंको स्मरण होगा, कि सम्राज्ञी जिङ्गोने सन् २०१ ई०के उपरान्त कोरियापर चढ़ाई की थी। कोरिया-राज्यको करद बनाया था। कोरिया-राज्य कुछ दिनोंतक जापानको वार्षिक कर भेजता रहा। इसके उपरान्त उसने कर भेजना बन्द कर दिया। हिडियोशीको कोरिया-राज्यपर चढ़ाई करनेका यह एक बहाना मिल गया। उसने कोरियामें अपना एक दूत भेजा। दूतने कहला भेजा, कि कोरियाको मदद मिलना कर जापानको कर देना चाहिये। [illegible] जापा-

बन्दोबस्त नहीं किया। कोरियाके दूतने हिडियो-शीके हाथमें कोरिया-नरेशकी चिट्ठी दी। चिट्ठीमें कोरिया-नरेशकी ओरसे हिडियोशीको उन्नत पद प्राप्त करनेपर बधाई दी गई थी। इसके अलावा कोरियाके दूतने कोरिया-नरेशकी ओरसे भेंटकी चीजें हिडियो-शीके सम्मुख रखीं। भेंटमें ये चीजें थीं—घोड़े, बाज, भिन्न भिन्न प्रकारके वस्त्र, घोड़ोंके साज, बन्दरे जिनसेङ्ग (?) इत्यादि इत्यादि। जिस जमानेमें जापानी इन चीजोंको बहुत आदर किया करते थे। किन्तु हिडियोशी इससे सन्तुष्ट नहीं हुआ। इसने कोरियाके दूतोंको उत्तरकी प्रतीक्षा किये बिना ही कोरियाको लौट जानेकी आज्ञा दी।

शीघ्र ही चढ़ाई किया चाहता है। कोरिया जापानके मुकाबलेकी तय्यारी करने लगा। मौके मौकेसे मोर्चाबन्दी करने लगा। टूटे फूटे किलोंकी मरम्मत करने लगा। फौजें एकत्र करने लगा। रसद्‌का सामान जुटाने लगा। उस समय कोरियादेश बहुत कङ्गाल था। प्रायः २ सौ वर्षपर्य्यन्त उसको युद्ध न करना पड़ा था। कोरियावासियोंको युद्धविद्या भूल गई थी। जापानके अनुभवी सेनापतियोंका सामना करने लायक उनके पास सेनापति नहीं थे। जापानी फौजोंमें नाना प्रकारके आग्नेय अस्त्र व्यवहृत होते थे। उनके पास बन्दूकें थीं—तोपें भी थीं, किन्तु कोरियाके सिपाही आग्नेय-अस्त्रोंसे [illegible] अन-भिज्ञ थे। स्वतन्त्र रीति से कोरियाका रक्षण होना [illegible] [illegible] कोरिया चीनसे सहायता मांग सकता था। किन्तु चीन कोरियासे दूर और सुस्त था। [illegible] [illegible] जापानसे युद्ध हो [illegible] कोरिया [illegible] [illegible] सकता था।

युद्धस्थलमें जानेके लिये तय्यार किये गये। क्वाण्टोद्वीप और शिकोकूके अनेक नरपति भी अपनी अपनी फौजोंके साथ कोरियापर चढ़ाई करनेवाली सैन्यमें योग देनेके लिये प्रस्तुत हुए। जिन महाराजोंके राज्य समुद्र किनारे थे, नाव और मल्लाह एकत्र करनेकी खिदमत उनको सौंपी गई। हिजेन प्रदेशके नगोया स्थानमें कोरियापर चढ़ाई करनेवाली फौज एकत्र हुई। जापान-सरकारके झण्डेके नीचे ३ लाख सिपाही जमा हुए। इनमें १ लाख ६० हजार सिपाही तुरन्त ही कोरियाकी तरफ रवाना किये गये। हिडियोशी जापान हीमें रहा। इन सिपाहियोंको काटो और कोनिशी नामक २ सर्दार सेनापतियोंके अधीन किया। दोनो सेनापति यद्यपि अपने कामोंमें स्वतन्त्र थे, किन्तु दोनोंको मिलकर युद्ध करनेकी आज्ञा दे दी गई थी।

समय जापानने चौथीवार कोरियापर आक्रमण किया है। कोनिशीने कोरियामें पहुंचते ही कोरियाके फुशान नामक बन्दरगाहपर कबजा कर लिया। इसके उपरान्त ही अपनी सेन्यको कोरियाकी राजधानीकी ओर अग्रसर किया। राहमें छोटी छोटी लड़ाइयां हुईं। कोरियाकी फौजें भागीं। कोरियाके अनेक किलोंपर भी जापानी फौजोंने अधिकार कर लिया। कोरिया-प्रदेशमें महात्रास उपस्थित हुआ। कोरिया सरकारकी सम्हला टूट गई। स्वयं कोरियानरेश टिचेन चीनकी सीमापर किसी सुरक्षित नगरकी ओर भागनेपर तय्यार हुए। इधर अल्पकालमें जापानी फौजें कोरिया-राजधानीमें दाखिल हो गईं। यहांतक दोनो जापान-सेनापतियोंकी फौजें मिलकर काम कर रही थीं। इसके उपरान्त दोनों फौजें पृथक हुईं। कोनिशी अपनी फौज लेकर उत्तरकी ओर रवाना हुआ और काटो सैन्यसहित उत्तर-पूर्व्वीय प्रदेशोंकी ओर। इस अवसरमें कोरियानरेश राजधानीसे भागकर चीन कोरियाकी सीमाके इचिट नामक सुरक्षित नगरमें चला गया। सेनापति कोनिशीकी फौज उसके पीछे

पीछे हो थीं। अल्पकालिक घोर युद्धके उपरान्त हचिउ नगरपर जापानी फौजोंका अधिकार हो गया। कोरियानरेश हचिउनगरसे जान लेकर भागे। हचिउनगरमें रसद्का बहुत बड़ा भाण्डार था। जापानी फौजोंने उसपर कबजा कर लिया। सेनापति कोनिशीने फुसान-बन्दरमें लगी हुई अपनी नावोंद्वारा भी कुछ काम लेना चाहा। नावोंद्वारा कोरियाके पाश्चात्य किनारेपर कबजा करना चाहा। जापानी नावें फुसान बन्दर परित्याग करके समुद्रमें पहुंचीं। कोरियाकी नावोंका बेड़ा जापानी नावोंके बेड़ेकी अपेक्षा जबरदस्त था। उसने जापानी नावोंको फुसान-बन्दरसे निकालकर खुले समुद्रमें भगा दिया। इसके उपरान्त जापानी नावोंपर [illegible] आक्रमण किया। जापानी नावोंने [illegible] बन्दरमें फिर आकर अपनी रक्षा की। इस एक विजयसे कोरियावासियोंका हौसला बढ़ गया। कोरियाके सि-योंने इतनी हिम्मत आ गई, कि वे जापानी फौजोंके एकबारगी ही नाश कर देनेपर तयार हुए।

इधर होता हुआ चीन भी कोरियाके [illegible] पिङ्गियाङ्गमें हार गया। कोरियाके [illegible]

सावटङ्ग-प्रदेशमें ५ हजार सिपाहियोंकी एक फौज तय्यार की जाकर कोरियाकी सहायताके लिये भेजी गई। इस मुट्ठीभर चीनी फौजने पिङ्गयेङ्ग-नगरमें जापानी फौजपर एकाएक आक्रमण किया। जापानी फौजने पीछे हटकर चीनी फौजको पिङ्गये-नगरमें घुस आने दिया। इसके उपरान्त भीमवेगसे चीनी फौजपर आक्रमण करके उसको नष्टप्राय कर दिया। बचे हुए चीनी सिपाहियोंने सावटङ्ग-देशमें जाकर दम लिया। अब चीनकी आंखें खुलीं। वह समझ गया, कि जापानी फौजोंका दमन करना सहज नहीं है। उनको परास्त करनेके लिये बहुत बड़ी सैन्यका प्रयोजन है। सन् १५९२ ई०में चीनने जापानसे सन्धि करनेका बहाना किया। जापानी फौजें सन्धि होनेकी आशासे निश्चिन्त हो बैठीं, —उधर चीन जापानी फौजोंका दमन करनेके लिये बहुत बड़ी फौज [illegible] तय्यार करने लगा। सन् १५९२ ई०के अन्तमें जापानी फौजें पिङ्गयाङ्ग नगरमें निश्चिन्त होकर बैठी थीं। इसी समय प्रायः ५० हजार चीनी सिपाहियोंने कोरियाके सिपाहियोंके साथ मिलकर पिङ्गयाङ्ग पर

लिया। जापान-सेनापति कोनिशी अपनी सैन्यकी अपेक्षा वैरीकी सैन्य अधिक देखकर पिङ्गयाङ्ग नगर छोड़कर पीछे हटा। पीछे हटनेके समय चीनी फौजोंने जापानी फौजोंपर बारम्बार आक्रमण किया। जापानी फौजें नितान्त क्षतिग्रस्त हुईं।

चीनी फौजने जापान-सेनापति कोनिशीकी फौजको बहुत दूरतक भगाकर सेनापति काटोकी सैन्यकी ओर रुख फेरा। काटो उस समय कोरियाके पाश्चात्य किनारोंपर कब्जा करके बैठा था। काटोने बहुसंख्यक चीनी सैन्य देखकर धीरे धीरे पीछे हटना आरम्भ किया। किन्तु कोनिशीकी तरह वह बदहवास होकर पीछे नहीं हटा। अपनी समस्त किलाबन्दियोंपर घोर युद्ध करता था। रक्तकी नदियां बहाता था। भूतिमद धरातलको रुधिरवर्षणासे कर्दममय बनाता हुआ—धीरे हटता था। इस तरहकी लड़ाईमें चीन और जापानकी फौजें नितान्त क्षतिग्रस्त हुईं। [illegible] भागने जापान-सेनापति काटो [illegible] [illegible] चीनी [illegible] [illegible]

चीनी फौजें परास्त हुईं। पिङ्गयाङ्ग नगरकी चीनी मुड़कर भागीं। जाड़ेके दिन थे। राहमें बरफ जमी थी। इसी वजह जापानी फौजें चीनी फौजोंका पीछा न कर सकीं। इस युद्धसे जापानी फौजोंने चैतन्य रहनेका चिरस्मरणीय सबक सीखा। उधर चीनी फौजें शूर वीर जापानी सिपाहियोंका लोहा मान गईं।

पूर्व्वोक्त युद्धके उपरान्त सुलहकी बात चीत चली। कोरिया सुलहपर राजी नहीं होता था। वह जापानसे घृणा करता था—चीनसे डरता था। अन्तमें चीन और जापान दोनोंने कोरियाको अलग करके स्वयं सन्धिका मामला तै करना शुरू किया। जापानी दूत चीनराजधानी पेकिनमें गया। वहां उसने इन नियमोंपर सन्धिकी,—"चीन-सम्राट् हिडियोशीको जापान-नरेशकी उपाधि दें। एक मङ्गोली शिवापत भी अता फर्मावें। जापानी फौजें कोरिया परित्याग कर दें और फिर कभी कोरियापर चढ़ाई न करें।" जापानी फौजोंने अपना विजय किया हुआ स्थान परित्याग करने और पीछे हटनेमें बहुत आपत्ति की। अन्तमें पीछे हटीं। चीन-सरकारने हिडियोशीको खिलअत

पहचाननेके लिये अपना एक दूत जापानमें भेजा। सन् १५८६ ई०को ग्रीष्मऋतुमें चीनका दूत जापानमें पहुंचा। हिडियोशीने उसका धूमधामी स्वागत किया। यहीं हमें एक बात कह देना चाहिये। चीन और जापानके सन्धि-नियमोंका स्वरूप हिडियोशीसे अभीतक प्रकट नहीं किया गया था। सन्धि करनेवाले डरते थे, कि शायद सन्धिनियम हिडियोशीको पसन्द न आवे। हिडियोशी चीनी भाषा नहीं जानता था। एक बौद्ध पुजारी नियमोंके भाषान्तरपर नियुक्त किया गया। चीनी दूतने बौद्ध पुजारीको सन्धि-नियमोंको कोमल और मृदु शब्दोंमें भाषान्तर करनेके लिये कहा। किन्तु धार्मिक पुजारी सन्धिनियमोंका यथायथ अनुवाद करने हीकी बातपर हट रहा। बहुत बड़ा एक दरबार हुआ। दरबारमें बौद्ध पुजारीने चीनसम्राट्का पत्र हिडियोशीको सुनाया। पत्रमें चीनसम्राट्ने हिडियोशीको लिखा था, कि मैं तुमको जापानका नरेश मानता हूं। तुम्हें खिलअत भेजता हूं। इसके उपरान्त चीनदूतने हिडियोशीके सामने खिलअत रक्खी।

[illegible]

कोरियामें मौजूद थी। १ लाख ३० हजार सिपाही उसमें और मिला दिये गये। रसदकी कमीसे तथा जापानी फौजोंके अन्दर होनेसे बहुत कठिनाइयें उपस्थित होती थीं। सन् १५९७ ई० में इनके चीनने ५ हजार सिपाही कोरियाकी सहायताके लिये भेज दिये। कोरियाके छोटी नावोंके बेड़ेने फुसान-बन्दरमें ठहरी हुई जापानी नावोंपर आक्रमण किया। फल बहुत बुरा हुआ। कोरियाके बेड़ेको, कुछ नावें गंवाकर और पूर्णरूपसे परास्त होकर पीछे हटना पड़ा। जापानी फौजोंने दक्षिण-कोरियामें प्रवेशके पीछे स्थानोंपर कब्जा कर लिया था। इसी

सम्बन्ध तोड़ दिया। किन्तु जापानसेनापति कूरोडा और हाचीसुका यथासमय काटोकी सहायताके लिये पहुंच गये। जापानी फौज जबरदस्त हुई। उसने चीन और कोरियाकी सैन्यको परास्त किया। चीन और कोरियाकी फौजें भागकर कोरियाकी राजधानी सिउलको लौट गईं। यह लड़ाई सन् १५९८ ई०में हुई थी। जापान-इतिहासमें लिखा है, कि इस युद्धमें ३८ हजार ३ सौ चीनी और कोरियन सिपाही मारे गये थे। जापानी फौजोंने इन मरे हुए सिपाहियोंके सिर काटकर जापान राजधानी क्यूटोमें भेज दिये थे। वहां वे दैवत्स्र मन्दिरके समीप गाड़े गये। गड़े हुए सिरोंके ऊपर एक स्मारकचिह्न स्थापित किया गया। क्यूटोनगरके दैवत्स्र-मन्दिरके समीप आज भी वह स्मारकचिह्न मौजूद है।

गया। वह शान्त प्रकृतिका मनुष्य था। उसने जापान-कोरियाकी लड़ाई तुरन्त ही रोक दी और जापानी फौजोंको कोरियासे लौट आनेकी आज्ञा दी।

हिडियोशीका जीवन समाप्त होनेके साथ ही जापानकी उस समयकी उन्नति भी समाप्त हो गई। हिडियोरी नामक हिडियोशीका एक पञ्च-वर्षीय पुत्र था। वही बालक हिडियोशीका उत्तरा-धिकारी बनाया गया। ४। ५ मनुष्योंकी एक समिति तय्यार हुई। वह समिति उस बालकके बदलेमें जापान-राज्यका काम करने लगी। हिडियोशी गरीबका लड़का था। किन्तु उसने अपने भुजबल और मस्तिष्कबलसे समस्त जापानपर प्रतापान्तरसे शासन किया। जापानियोंने हिडियोशीको अपना बड़ा समझा। आज भी जापान हिडियोशीका नाम लेकर अपनेको गौरवान्वित समझता है।

अष्टम परिच्छेद ।

—०◇०—

गत परिच्छेदमें हमने इयाहूका नाम एकबार लिखा है। हिडियोशीने क्वाण्टोप्रदेश जीतकर इयासूको उसका हाकिम बना दिया था। हिडियोशीकी मृत्युके समय इयासू ५६ वर्षकी उम्रका था। इसकी उत्पत्ति मिनामोटो घरानेसे थी। पहले यह नवनागकी फौजमें सेनापति था। नवनागकी मृत्युके उपरान्त हिडियोशी जापानका प्रधान पुरुष बन गया। उसके सामने यह अधिक प्रसिद्धि लाभ नहीं कर सका। किन्तु यथार्थमें इयासू युद्धविद्यामें कुशल और राजनीतिमें पारङ्गत था। हिडियोशीने अपनी मृत्यु समीप देखकर इयासूसे कहा था,—'इयासू ! मुझे मालूम है,

कर रहा है। इशिहामित्सूनारी दुश्मनीसे इयासूको बेइज्जत किया चाहता है।

इशिहामित्सूनारीका पक्ष ग्रहण करनेवाले दक्षिणीय जापानके महाराजोंमें एशिगोप्रदेशका महाराज युसुगी अपेक्षाकृत ज्यादा जबरदस्त और शक्तिशाली था। इयासूने इस महाराजको जापान-सम्राट्की तरफसे परवाना भेजकर क्यूटोमें बुलवाया। महाराज युसुगीने आनेसे इनकार कर दिया। इयासू इससे चिन्तित हुआ। उसने युसुगी और इशिहामित्सू-नारी आदि महाराजोंपर चढ़ाई करनेकी तय्यारी आरम्भ की। किन्तु इसकी तय्यारी अभी पूरी न होने पाई थी, कि इशिहामित्सूनारी अपनी सैन्य लेकर इयासूके फुशीमी नामक किलेपर चढ़ आया। इयासू उस समय अपने किलेमें मौजूद नहीं था। इशिहा-मित्सूनारीकी सैन्यने इयासूका किला दखल कर लिया और अन्तमें उसको आग लगाकर ख़ाक स्याह बना दिया।

प्रधान वैरी मित्सूनारीसे युद्ध करना चाहिये। इयासू
७५ हजार सिपाही लेकर मित्सूसे युद्ध करने चला।
मित्सू भी १ लाख २८ हजार सिपाही लेकर इयासूका
मुक़ाबला करने निकला। सन् १६०० ई० में सेकी
गाहारा स्थानमें इयासू और मित्सूकी सैन्यका सामना
हुआ। दोनो ओरकी फौजोंमें तोपें और बन्दूकें
मौजूद थीं। सूर्य्योदयसे लेकर सन्ध्यापर्य्यन्त दोनों
ओरकी फ़ौजें जी खोलकर लड़ीं। इयासू सुचतुर
सेनापति था। उसने अपने थोड़े ही सिपाहियोंसे
वैरीके बहुसंख्यक सिपाहियोंको परास्त किया।
इस लड़ाईमें सब मिलाकर प्रायः ४० हजार सिपाही
मारे गये। मित्सू अनेक बागी महाराजोंसहित
गिरफ़्तार हो गया। मित्सू और उसके साथी महा-
राजे ईसाई थे। ईसाके धर्म्ममें आत्महत्या करना
मना है। फलतः मित्सू आदिने आत्महत्या नहीं की
और इयासूने उनके सिर जल्लादोंद्वारा कटवा दिये।
हम पहले ही लिख चुके हैं, दक्षिणीय आरामकी
प्रायः समस्त राजे महाराजे इयासूके विरुद्ध थे।
इयासूने अपने दो सेनापतियोंको अधीनतामें असवहुत
सैन्य भेजकर दक्षिणीय आरामके समस्त राजों महा-

राजोंको जापान-सम्राट्के अधीन किया। इयासुकी इन कामोंसे जापान-सम्राट् उसपर नितान्त सन्तुष्ट हुए। सन् १६०३ ई० में उन्होंने इयासुको शोगनकी पदवी दी। शोगन बननेके उपरान्त इयासु राजधानी क्यूटो परित्यागकरके यडो-नगरमें रहने लगा। यहीं उसने अपना दुर्ग तथा महल तय्यार कराया।

इयासुने वीरचूड़ामणि हिडियोशीके लड़के हिडियोरीके साथ बहुत गन्दा व्यवहार किया। हिडियोरीको २० वर्षकी उम्रका हुआ देखकर इयासु बेचैन हुआ। उसने ख्याल किया, कि अब हिडियोरी शोगन बनाया जावेगा और हिडियोरीके शोगन बन जानेपर उसकी और उसके घरानेकी [illegible] पद [illegible] सब हो जावेगा। इयासुने यह [illegible] किया कि हिडि-

पित हुआ। ऐसा विलोपित हुआ, कि उसका पता कभी न चला। जिस हिड़ियोशीके प्रबलप्रतापके सम्मुख सम्पूर्ण जापान कांपता था—उसका पुत्र हिड़ियोरी गुमनामीकी यवनिकामें सदैव सदैवके निमित्त छिप गया। अहो काल! तुम्हारी गति बहुत ही विचित्र और अगम्य है।

हिड़ियोशीने कोरियापर चढ़ाई कराई थी। चढ़ाई का कोई फैसला नहीं हुआ। फैसला हुआ या न हुआ; किन्तु चढ़ाईकी वजह कोरिया और चीनसे जापानकी दुश्मनी हो गई थी। इयासूने वह दुश्मनी मिटाना चाही। इसने प्रकारान्तरसे कोरिया-नरेश पर प्रकट किया, कि यदि तुम जापानसे मैत्री किया चाहते हो, तो अपना दूत भेजो। कोरियाका दूत आया। सन् १६०७ ई० में कोरिया और जापानमें सन्धि हो गई—साथ साथ चीन और जापानमें भी सन्धि हो गई। चीन जापानकी सन्धि गत सन् १८८४ ई० के अखीरतक कायम रही। इसके बाद सन्धि टूटी और सन् १८८४ ई० में चीन-जापान युद्ध हुआ। इस युद्धका हाल हमारे अनेक पाठक जानते होंगे।

इस अवसरमें जापानका ईसाईयोंसे क्रमशः सरकी

करता जाता था। अनेक प्रदेशोंके राजे महाराजेतक ईसाई हो गये थे। इयास्सू शीघ्रतापूर्व्वक फैलते हुए ईसाईधर्म्मसे भीत हुआ। उसने खयाल किया, कि ईसाईधर्म्मका प्रचार अधिक हो जानेसे एक दिन किसी ईसाईदेशका जापानपर कबजा हो जावेगा। सन् १६१४ ई० में उसने एक आज्ञापत्र निकाला, कि समस्त विदेशी ईसाई देशसे निकल जावे। उसने ईसा-इयोंके गिरजे आदि भी तुडवा दिये। जापानमें ईसाई बहुत हो गये थे। ईसाइयो और जापान-सम्राट्की फौजोंमें खूब मार काट हुई। कितने ही जापानी ईसाई फिरसे बौद्ध हो गये। कितनों हीने ईसाई रहकर भी बौद्ध हो जानेका बहाना किया। इया-स्सूकी आज्ञा कार्य्यमें पूर्णतया परिणत न हो सकी। जापान ईसाइयोंसे एकबारगी ही खाली न हो सका।

निर्बल हो जानेपर स्वतन्त्र बन जाते थे और जापान-साम्राज्यमें अशान्ति उपस्थित करते थे। फलतः इयासूने जापानके राजे महाराजोंके सुधारका संकल्प किया। हम ऊपर लिख आये हैं, कि इयासूने प्रायः समस्त बागी महाराजोंको दमन करके उनके राज्य अपने कबजेमें कर लिये थे। सुधारका संकल्प करते ही इयासूने अनेक पदच्युत राजोंको उनके राज्य लौटा-कर उन्हें अपना अनुगृहीत बनाया। अवश्य ही इया-सूने अधिकांश छीने हुए राज्योंका अधिकारी अपने सम्बन्धियों वा अपने लड़कोंको बना दिया। पहले जापानके राजे महाराजोंकी ३ श्रेणियां थीं। इया-सूने नये प्रबन्धके साथ साथ उनकी ५ श्रेणियां कर डालीं। पहले दरजेकी श्रेणीमें अपने ३ छोटे लड़कोंके ३ घराने रखे। इस श्रेणीका नाम रखा गोसानको। इयासू शोगनपद चिरकालके निमित्त अपने घराने हीमें रखना चाहता था। इसी कारण उसने यह नियम कर दिया, कि भविष्यमें गोसानकी घराने हीके मनुष्योंसे शोगन बनाये जावें। इयासूने जापानके राजों महाराजोंको ५ श्रेणियां निम्नलिखित प्रकारसे तय्यार कीं :—

१—महाराज गोसानकी । (३ सर्व्वश्रेष्ठ घराने ।)
२—महाराज फूदाई । (इयासू-घरानेके नौकर सरदार)
३—महाराज तोजामा। (नौकर सरदारोंके समान पदवाले)
४—राजा कामोन । (इयासू-घरानेके सम्बन्धी ।)
५—राजा डायमोज । (इन राजोंका विशेष खरूप नहीं था)

हाटामोटो नामक श्रेणीके प्रायः २ हजार राजे डायमोज राजोंसे भी छोटे दरजेके थे । आगे, गोकेनिन श्रेणीके ५ हजार राजे हाटामोटो श्रेणीके राजोंसे भी नीचे दरजेके थे । इनके भी नीचे समुराई जातिके लोग रखे गये ।

योंमें प्रधान है। तीनो जातियां इस जातिको बेइज्जती न करें। समुराई जातिका कोई मनुष्य यदि शेष ३ जातियोंके किसी मनुष्यका प्राणवध भी कर रहा हो, तो किसी मनुष्यको बाधा देना उचित नहीं है। तलवार ही समुराईकी जान है।" सन् १६०० ई०के उपरान्त इयासूने पूर्व्वोक्त रीतिसे जापानवासियोंको श्रेणिबद्ध किया था। जापानकी अधिकांश जातियां आजतक उसी श्रेणीमें बंटी हुई हैं।

इयासूके जमानेमें जापानमें बहुत शान्ति रही। इयासू विद्वान और विद्याप्रेमी था। उसने शान्तिके समय जापानवासियोंको चीनकी विद्या सीखनेमें तथा भांति भांतिके शिल्प और व्यवसायमें प्रवृत्त किया। इयासूने १७वीं शताब्दिके आरम्भमें कोरियासे छापेकी कला मंगाई। सन् १३१७ ई०में कोरियावासी छापेकी कला अपने देशमें जारी कर चुके थे। स्वयं इयासूने एक अत्यन्त उपयोगी पुस्तक लिखी और उसने छापेखानेमें छपवाई थी। वर्त्तमान परिच्छेदका अधिक भाग इयासूरचित पुस्तकके अङ्गरेजी भाषानुवादके आधारपर तय्यार किया गया है।

हम पहले लिख चुके हैं, कि जापानियों

पहले पहल पुरतगाली गये थे। इसके उपरान्त सन् १६०० ई०में डच जातिका एक जहाज जापानमें गया। इसी जहाजद्वारा आदम नामक एक अङ्गरेज भी जापानमें पहुंचा था। आदमने इयासूके दरबारमें बहुत रसूखियत हासिल की थी। सन् १६०८ ई०में डच जातिवालोंका एक और जहाज जापानमें गया। सन् १६११ ई०में अङ्गरेजोंका भी एक जहाज जापानमें पहुंचा। उस समय अङ्गरेजोंके नरपति प्रथम जेम्स थे। उन्होंने जापानमें अङ्गरेजोंका व्यापार जारी करनेके लिये जापान-सरकारको एक पत्र लिखा था।

बनकर और इसके सामने निर्व्विघ्न रूपसे शोगनपदका काम करके इसके घरानेकी शोगनगरीका सिलसिला आरम्भ कर दे। इयासूका दूसरा मतलब यह था, कि वह अपने सिरसे शोगनपदका गुरुकार्य्य अलग करके भी अपने पुत्रकी शक्तिकी सहायतासे निश्चिन्तापूर्व्वक जापानके अन्यान्य राज्यकार्य्यमें सुधार करे। इयासू शोगन न रहकर भी शोगनका काम करता था। जापानका बहुत कुछ सुधार करनेके उपरान्त सन् १६१६ ई०में इयासूने शरीर त्याग किया। इयासू मर गया, किन्तु जापानमें वह अपनी कीर्त्ति अक्षय कर गया।

नवम परिच्छेद।

विदेशियोंके जापान प्रवेशके कारण ही इयास् घरानेकी भोगनगरी नष्ट हुई। हम लिख चुके हैं, कि पुरतगाली और डच जातिके लोग जापानमें व्यापार करते थे। अङ्गरेज भी पहुंचे थे, किन्तु उनके व्यापारके लिये जापानकी आबोहवा डच लोगोंने मुवाफिक न आने दी। कुछ दिनोंके उपरान्त स्पेनके लोग भी जापानमें गये। डच लोगोंने पुरतगाल और स्पेन-वालोंके विरुद्ध जापानको बहुत भड़काया।

बुरी जान पड़ी। उन्होंने अङ्गरेजोंको अपने देशमें अफीम बेचनेकी मुमानियत की। अङ्गरेजोंने मुमानियतकी परवाह नहीं की। सन् १८४० ई०में इङ्गलण्ड और चीनमें अफीमके लिये युद्ध हुआ। चीन हारा। हारनेके बाद उसको अपने कई बन्दर विदेशियोंके व्यापारके लिये खोलना पड़े। अमेरिकाके सौदागरी-जहाज भी उन बन्दरोंमें जाकर अपना व्यापार फैलाने लगे। अमेरिकाके जहाज अमेरिकाके शानफरानसिसको बन्दरसे चलते थे।

हम पहले लिख चुके हैं, कि अमेरिकाने जापानमें अपने जहाजोंके लिये स्थान पानेकी चेष्टा की, किन्तु चेष्टाका कोई फल न हुआ। अन्तमें अमेरिकाने अपने जहाजी अफसर पेरीको जापानसरकारके नाम एक चिट्ठी देकर जापानमें भेजनेका संकल्प किया। अमेरिकाके जङ्गी जहाजोंका एक बेड़ा पेरीकी अधीनतामें कर दिया गया। अमेरिकाने पेरीको कह दिया, कि पहले जापान-सरकारको समझाना,—यदि वह न माने, तो बलपूर्वक जापान-टापूपर अधिकार करनेका उद्योग करना। पेरीने जापानियोंको समझानेके लिये रेल, तार, प्रभृति नवाविष्कारोंके नमूने भी अपने साथ ले लिये। रूस, इङ्गलैंड, फ्रान्स, प्रभृति शक्तियोंने अपने जङ्गी जहाज भी पेरीके साथ रवाना करनेकी इच्छा दिखाई। किन्तु अमेरिकाने उनकी बात स्वीकार नहीं की। सन् १८५२ ई० में पेरीने दलबल-सहित अमेरिका परित्याग किया।

सन् १८५३ ई०की ८वीं जुलाईको पेरी साहब उसी उरागाके निकट जापान—खाड़ीमें आ पहुँचे। जब लोगोंने जापानियोंमें अमेरिकाके जङ्गी जहाजोंके जापानमें आनेका समाचार पहुँचा है

रखा था। जापानी अमेरिकाके जङ्गी जहाजोंकी अनेकी अपेक्षा कर रहे थे। किन्तु अमेरिकाके जङ्गी जहाजोंको यड्डोकी खाड़ीमें देखकर जापानी नितान्त आश्चर्य्यान्वित हुए। उन्होंने इञ्जनद्वारा चलनेवाले विशालाकार जङ्गी जहाज पहले कभी नहीं देखे थे। जापान-सरकारने अमेरिकाके जङ्गी जहाजोंके प्रधान नौ-सेनापति पेरी साहबसे कहा, कि आप अपने जहाज लेकर नागासाकी बन्दरमें चले जाइये। वहींसे बातचीत कीजिये।

हैं। यदि जापान-सरकार इस समय जापानके जोशका साथ न देगी, तो जापान अपनी सरकारसे नाराज होगा।

१०—बहुत दिनोंसे जापानने युद्ध नहीं किया है। जापानको युद्ध करनेका इससे अच्छा मौका जल्दी हाथ न आवेगा।

इसी समय जापानमें युद्धकी तय्यारियां भी आरम्भ हो गईं। मन्दिरोंके और मठोंके घण्टे गलाये गये। उनकी गली हुई धातुसे तोपें ढाली गईं। तलवारें बनाई जाने लगीं। जापानी सिपाहियोंको विलायती कायदेके मुताबिक युद्धशिक्षा दी जाने लगी। इसी अवसरमें शोगनकी मृत्यु हो गई। सन् १८५३ ई० की २५वीं अगस्टको इयासू घरानेके १२वें शोगन इयेयोशीकी मृत्यु हो गई। उसका पुत्र ईसादा अपने पिताके पदपर पदारूढ़ हुआ। एक शोगन मर गया, दूसरा उसके पद-पर प्रतिष्ठित हुआ,—किन्तु जापान साम्राज्यपर इसका कुछ असर नहीं हुआ। उन दिनों जापान-सरकार और शोगन दोनों निकम्मे हो गये थे। [illegible] रखते थे। [illegible] इसलिये जापान [illegible]

परिवर्तन नहीं हुआ। जो राजे पहले काम करते थे, वही करते रहे।

इधर सन् १८५४ ई०की १३वीं फरवरीको अमेरिकाके पेरी साहब १० जङ्गी जहाजोंके साथ यड्डोकी खाड़ीमें फिर पहुंचे। जापान-सरकारसे अपनी चिट्ठीका जवाब मांगा। नाना तर्क-वितर्कके उपरान्त नयी शोगनकी सरकारने अमेरिकाका जापान-प्रवेश स्वीकार किया। सन् १८५४ ई०की ३१वीं मार्चको कानागावा स्थानमें जापानने पहली विदेशी सन्धि अमेरिकासे कर ली। कानागावाकी बस्ती ही खूब बढ़कर आजकल याको-हामानगरके नामसे प्रसिद्ध है।

विरोधी बना और दूसरा ईसाई-पक्षपाती। ईसाई-विरोधी दलने शोगनको भी मलामत करना शुरू की यह दल कहता था, कि शोगनको विदेशियोंसे सन्धि करनेका अधिकार नहीं है। इस बारेमें जो कुछ करते, जापान-सम्राट् करते। ईसाई-विरोधी दलका क्रोध इतना बढ़ गया, कि उसने विदेशियोंपर आक्रमण करना भी आरम्भ किया। जापानमें गई हुई विदेशी शक्तियोंके कन्सलोंने शोगन-सरकारसे ईसाई विरोधी जापानियोंके आक्रमणकी शिकायत की। बालक शोगनके प्रधान रक्षक महाराज ईकामोनने ईसाई-विरोधी दलके प्रधान पुरुष महाराज मिटोको गिरफ्तार करके उसीके किलेमें कैद कर दिया। इससे ईसाई-विरोधी दलकी उत्तेजना और ज्यादा हो गई। इस दलके १८ आदमियोंने मौका पाकर शोगनके प्रधानरक्षक महाराज ईकामोनको सन् १८६० ई०की २३वीं मार्चको मार डाला। वे उसका शिर काटकर महाराज मिटोके पास ले गये। ईकामोनकी मृत्युके उपरान्त ही महाराज मिटो कैदसे छूट गये। ईकामोनके मरते ही जापानके ईसाई-विरोधियोंका दल और जबरदस्त बन गया।

दशम परिच्छेद।
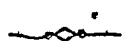
सन् १८६० ई०के उपरान्तसे ईसाई-विरोधी दल प्रकाश्यरूपसे विदेशियोंपर आक्रमण करने लगा। सन् १८६१ ई०की १४वीं जनवरीको यडो नगरमें अमेरिकाके कन्सलके सिकत्तर हुस्केनपर ईसाई-विरोधी जापानियोंने भयानकरूपसे आक्रमण किया। हुस्केन घायल हुआ और कुछ दिनों बाद गहरे जख्मोंकी वजह मर गया। जापान सरकारको इस हत्याके लिये अमेरिकाको [illegible]

स्वराज्यकी ओर लौटा। राहमें कुछ अङ्गरेज मिले। उन लोगोंने महाराज सत्सुमाकी सवारीकी ओर स्वयं सत्सुमानरेशकी ताजीम नहीं की इसपर महाराजके एक सिपाहीने इन वेअदब अङ्गरेजोंमें एकको मार डाला। शेषके अङ्गरेज भाग गये। जापानके अङ्गरेजोंमें बड़ा जोश फैला। अङ्गरेजोंके जापानी कान्सल नील साहबने शोगन-सरकारसे एक अङ्गरेजकी हत्याके बदलेमें १५ लाख रुपये और अङ्गरेजके हत्यारे सिपाहीको मांगा। शोगन-सरकार हरजानेके रुपये देती देती हैरान हो गई थी। उसने जवाब दिया, कि अङ्गरेज अपनी वेअदबीकी वजह मारा गया, हम उसकी जानके बदलेमें रुपये न देंगी। इसपर नीलसाहबने चीन-समुद्रके अङ्गरेजी जङ्गी जहाज बुलाये। सन् १८६३ ई० की ११वीं अगस्तको अङ्गरेज नौ-सेनापति क्यूपरकी अधीनतामें अङ्गरेजी जङ्गी जहाजोंका वेड़ा कागोशिमा-बन्दरके सम्मुख उपस्थित हुआ। इस वेड़ेने जापानियोंके ३ स्टीमर डुबा दिये और कागोशिमा बन्दरकी किलाबन्दियोंको गोलवर्षासे चूर्ण विचूर्ण कर दिया। इनके उपरान्त अङ्गरेजी जङ्गी जहाजोंकी फौज

तोपखानेसहित कागोशिमा नगरकी ओर अग्रसर हुई। इसने गोलोंकी मारसे कागोशिमा नगरको भूतलशायी बना दिया और अन्तमें उस ध्वंसविध्वंस नगरमें आग भी लगा दी। अङ्गरेजोंकी इतनी प्रबलता देखकर शोगन-सरकार डरी। उसने डरकर अङ्गरेजोंका वांछित अर्थ चुका दिया।

मनोमालिन्य हो गया था। शोगन-सरकारने विदेशियोंको जापान-प्रवेशकी आज्ञा दी थी, किन्तु सम्राट्-सरकार विदेशियोंसे घृणा करती थी और शोगन-सरकारकी इस हरकतसे वह निहायत नाराज थी। महाराज चोशू पहले शोगन-सरकारके पक्षमें था। किन्तु ईसाई-विरोधी होनेकी वजह वह शोगन-सरकारको छोड़कर सम्राट्-सरकारसे मिल गया। उसने अपने प्रदेशकी शिमानोसिकी नामक प्रणालीके किनारे अपना तोपखाना लगवाया और यह स्थिर कर लिया, कि विदेशियोंके जितने जहाज इस प्रणालीसे निकलें उनपर गोलावृष्टि की जावे। विदेशियोंके जहाज प्रायः इसी प्रणालीसे होकर निकला करते थे। सन् १८६३ ई० की २५ वीं जूनको अमेरिकाका "पेम्ब्रोक" जहाज इसी प्रणालीसे होता हुआ नागासाकीको जा रहा था। महाराज चोशूके तोपखानेने इस जहाजपर गोले चलाये, किन्तु पेम्ब्रोक अछूता बचकर निकल गया। इसके उपरान्त इसी सन्की ८वीं जुलाईको फरांसीसी गनबोट शिमानोसिकी-प्रणालीसे होकर निकला। महाराजके तोपखानेने इसपर भी गोले बरसाये। गनबोट बहुत क्षतिग्रस्त

हुआ और बहुत बुरी दशामें नागासाकीमें पहुंचा। इसके उपरान्त "मेडुसा" नामक डचके कन्नी जहाज-पर भी महाराजके तोपखानेसे गोले पड़े। मेडुसाने भी तोपखानेपर गोले बरसाये। अन्तमें उसको प्रणालीसे भागजानेहीमें अपनी रक्षा जान पड़ी। इन समाचारोंसे याकोहामाके और नागासाकीके विदेशियोंमें बहुत बेचैनी फैली। विदेशियोंने शोगन-सरकारसे हरजानेका प्रचुर अर्थ मांगा और उसे मन-

अगस्तको याकोहामासे जङ्गी जहाजोंका यह बेड़ा ग्रिमानोसिको-प्रणालीकी ओर रवाना हुआ। इसी सन्‌की पूवीं सितम्बरसे दवीं सितम्बरतक ग्रिमानोसिको-प्रणालीमें विदेशियोंके जङ्गी जहाजों और महाराज चोशूके तोपखानेमें लड़ाई हुई। प्रणालीके किनारेपर लगा हुआ महाराज चोशूका तोपखाना नष्ट हो गया—इधर विदेशी शक्तियां अपने जहाजोंसे उतर-कर चोशू-नरेशकी फौजोंसे लड़ने लायक नहीं थीं। सो, महाराज चोशू और विदेशियोंमें सन्धि हो गई। महाराज चोशूने प्रतिज्ञा की, कि भविष्यमें हमारा तोपखाना प्रणालीसे होकर निकलनेवाले विदेशियोंके जहाजोंपर गोले न बरसायेगा। इसके उपरान्त विदेशियोंके जङ्गी जहाज याकोहामाको लौट गये और विदेशियोंने ग्रिमानोसिको-प्रणालीकी चढ़ाईके लिये शोगन-सरकारसे ६० लाख रुपये जबरदस्ती वसूल करके आपसमें बांट लिये।

इस एक ही घटनासे जान पड़ता है, कि उस समय विदेशीलोग जापानसे बहुत जबरदस्तीके साथ रुपये वसूल किया करते थे। ग्रिमानोसिको-प्रणालीमें विदेशियोंका जितना नुकसान हुआ था उसके बदलेमें

रुपये विदेशियोंने मोगल-सरकारसे पहले ही वसूल कर लिये थे। इसके अलावा मोगल-सरकार महाराज चोभूपर स्वयं चढ़ाई करनेका समय ताक रही थी। विदेशी अपने जङ्गी जहाज लेकर स्वेच्छापूर्व्वक सिमा-नोसिकी-प्रणालीमें गये। लड़े भिड़े। इस लड़ाईमें अङ्गरेजोंका कोई नुकसान नहीं हुआ। इसपर भी विदेशियोंने मोगल-सरकारसे प्रचुर अर्थ लिया और आपसमें बराबर बराबर बांट लिया। तब मोगल-

उसने अमूल्य अनुभव प्राप्त किया। महाराजने भी अपनी ओरसे अनेक विद्यार्थी विलायत और अमेरिकामें नाना प्रकारकी शिक्षा लाभ करनेके लिये भेजे। समुराईके अतिरिक्त शेष तीनों जातियोंके बहुसंख्यक मनुष्य अपनी फौजमें भरती किये। अपने फौजको नवीन शिक्षासे सुशिक्षित किया, नये हथियारोंसे सुसज्जित किया।

एक ओर यह हो रहा था दूसरी ओर सम्राट्-सरकार और शोगन-सरकारका वैमनस्य क्रमशः बढ़कर भयङ्कर मूर्त्ति धारण करता जाता था। शोगन-सरकारका कथन था, कि विदेशियोंका जापानसे निकालना जापानकी शक्तिसे बाहर है। उधर सम्राट्-सरकार समझती थी, कि यदि शोगन-सरकार भी चाहे, तो विदेशी जापानसे निकाल दिये जा सकते हैं। दोनों सरकारोंका वैमनस्य बढ़ता देखकर सन् १८६३ ई०में शोगन इमोची जापानसम्राट्से मिलनेके लिये यड्डोसे जापान-राजधानी टोकियोमें गया था। उस समय कोमी जापानसम्राट् थे। कोमी और कोई नहीं,—वर्त्तमान जापान-सम्राट् मत्सुहितोके पिता थे। सम्राट् कोमीने शोगनसे कहा था, कि तुम

विदेशियोंको जापान-देशसे बाहर निकाल देनेकी आज्ञा दी। आज्ञा दी गई, किन्तु वह कार्य्यमें परिणत नहीं की गई।

हिमानोसिकी-प्रणालीवाले महाराज चोमूका ज्यादा परिचय फजूल है। महाराज चोमूके दिलमें यह खयाल पैदा हुआ, कि जापान-सम्राट्को चीन-देशमें किसी तरह ले आना चाहिये। चीन-[illegible]ने खयाल किया, कि जापानसम्राट्को चीन [illegible]

राज चोशूमें सन्धि हो जानेके उपरान्त शोगन-सरकारने सम्राट्-सरकारसे विदेशियोंके साथ किये गये सन्धि-नियमोंको मन्जूर कर लेनेकी प्रार्थना की। नवयुवक शोगनके रक्षक वयोवृद्ध हितोत्सूबाशीने इस बारेमें अविराम चेष्टा की। जापान-सम्राट्ने नवयुवक शोगन इमोचो और उसके रक्षकको जापान-राजधानी क्योटोमें बुलाया। ओसाका-बन्दर जापान-राजधानी क्योटोसे

कि जापान-सम्राट्को इन सन्धि-नियमोंको सम्भवत शीघ्र मञ्जूर करना ही विधेय है। उसने यह धमकी भी दी, कि विदेशी शक्तियोंके जङ्गी जहाज इस समय हियोगो-बन्दरमें मौजूद हैं। यदि सम्राट्-सरकार इन नियमोंको मञ्जूर करनेमें अरुचि दिखावेगी, तो विदेशी फौजें अपने जहाजोंसे उतरकर राजधानी क्यूटोमें दाखिल हो जावेंगी और जापान सम्राट्से बलपूर्व्वक उन नियमोंको स्वीकार करावेंगी। यह सुनकर जापान-सम्राट् भीत हुए। सन् १८६५ ई०को २६वीं अक्तोबरको इन्होंने सन्धि-नियमोंको स्वीकार कर लिया। बहुत दिनोंके छाये हुए बादल बरसे बिना ही छंट गये। जापानियोंकी राजनीतिका आकाश एकबार फिर निर्म्मल दिखाई दिया। आकाश दिखाई दिया, किन्तु आकाशकी प्यारी शोभा चन्द्र नहीं।

इसके उपरान्त सन् १८६६ ई०की १०वीं सितम्बरको १८ वर्षकी अवस्थामें ओसाकामें शोगन इमोचीका परलोकवास हुआ। इमोचीका रक्षक हितोत्सूबाशी मिटो प्रदेशका राजकुमार था। इमोचीके मरते जापान-सम्राट्ने हितोत्सूको शोगन बनाना चाहा।

शोगनका रक्षक बनकर हितोत्सूने अपने अकाट्य विचारों और गम्भीर बुद्धिका अच्छी तरह परिचय दिया था। जापान-सरकारका सम्मान हितोत्सूने सहज ही स्वीकार नहीं कर लिया। उसने कहा, कि यदि जापानके राजे महाराजे भी मुझे शोगन-पदके कार्य्यमें सहायता दें, तो मैं शोगन बनूंगा। जापानके अनेक नरनार्योंने हितोत्सूको शोगन पदके लिये सादर आह्वा-यित किया। अन्तमें हितोत्सू शोगन बना। शोगन-चूड़ामणि इयासूके घरानेका यह अन्तिम शोगन था, इसके उपरान्त जापानमें और कोई शोगन नहीं हुआ।

हुई—जापानके वन,उपवन, पर्व्वत, प्रान्तर, अधित्यका, उपत्यका एक स्वरमें गर्ज्जन कर उठे,—वलिहारि जापान-सम्राट्। वलिहारि। ।

सम्राट् मत्सुहितो १ सौ २१ पुश्तके सम्राट् हैं। जहांतक हम जानते हैं—मत्सुहितोके वरावर पुश्तैनी सम्राट् संसारमें दूसरे नहीं हैं। कौन जानता था, कि १५ वर्षके वालक मत्सुहितो वयसमें वालक होकर भी वुद्धिमें वयोवृद्ध है। जापानवासी समझते थे, कि मत्सुहितो भी अपने पिता तथा अपने अनेक पूर्व्वपुरुषोंके समान काठके पुतलेकी तरह जापान-सिंहासनपर वैठे रहेंगे। शोगन जापानका शासन करेगा। किन्तु मतसुहितोके भाग्योदयका समय था। सभी वातें मत्सुहितोके अनुकूल हो रही थीं। जापानके अनेक राजों महाराजोंके मनमें यह ध्यान उत्पन्न हुआ, कि शोगनकी सरकारको तोड़ देना चाहिये। अकेली सम्राट्-सरकार होकी सम्पूर्ण जापान-साम्राज्य-पर प्रभुता करने देना चाहिये।

महाराज टोसा वुद्धिमान और प्रभुताशाली मनुष्य था। उसने सन् १८६८ ई०के अक्तोवर महीनेमें शोगनको एक चिट्ठी लिखी। चिट्ठीका मजमून

यह था,—"इस समय जापान-शासनके दो केन्द्र हैं। जापान-साम्राज्यकी दो ओर अपनी निगाह और ध्यान फिरनेमें बहुत असुविधा होती है। इसी दिक्कतसे जापानमें बलवा हो गया और अब यह दिक्कत बहुत दिनोंतक नहीं रह सकती। आप अपनी प्रभुता जापान-सम्राट्के हवाले कर दीजिये। जिसमें जापान-शासनका एक केन्द्र स्थापित होवे। और यही विधि अवलम्ब करनेपर जापानदेश अन्यान्य देशोंका समकक्ष बन सकेगा।"

हुआ। शोगनपद विलोपित होनेके साथ साथ जापान साम्राज्यके शासनने नया स्वरूप बदला। पहले जापानदेश—जापानदेश मात्र था—नवीन स्वरूप धारण करते ही जापान देश एशियाकी महाशक्ति बनने लगा!
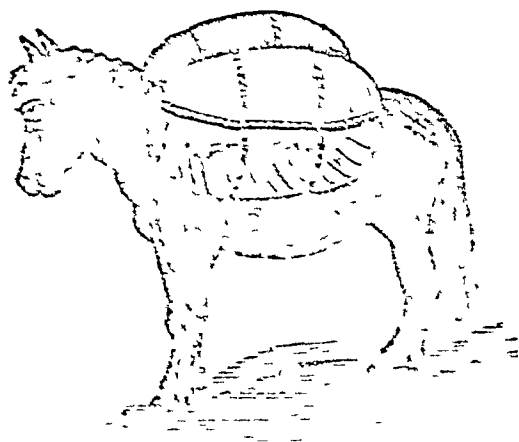
जपानका लदा हुआ टट्टू ।

एकादश परिच्छेद।

बालक सम्राट् मत्सुहितोने राज्यकार्य्य हाथमें लेते ही जापानके सम्पूर्ण राजों महाराजोंको एकत्र करके एक सभा करनेका विचार किया। पत्स्युन शोगनहितोत्सूवाशीके जिम्मे विदेशियोंके सम्बन्धका काम सौंपा। राजधानीकी रक्षा करनेवाली सैन्यको बदली कर दी। राज्यके प्राचीन कर्मचारी

राजोंको उनके राज्य उन्हें लौटा दिये। महाराज चोशूपर विशेष कृपा दिखाई। महाराज चोशूको अपना दरबारी बनाया और उसके सिपाहियोंको अपनी राजधानीका रक्षक। अनेक राजों महाराजोंने महाराज चोशूके जापान-सम्राट्का कृपाभाजन बनने-पर असन्तुष्टि प्रकट की, किन्तु महाराज चोशूके मित्र नरेशगण महाराज चोशूके सम्मानित होनेसे बहुत हर्षित हुए। चोशूपतिके मित्र अधिक थे बैरी कम। महाराज सञ्जोसनयोशीमीको जापान-सम्राट्ने अपना प्रधानमन्त्री बनाया। अपने सभापतित्वमें जापानके राजों महाराजोंकी एक प्रबन्धकारिणी सभा स्थापित की। इस सभाद्वारा राज्यकार्य्यमें सहायता ली जाने लगी।

पदच्युत शोगन उस समय क्यूटोके निकटस्थ नगर ओसाकामें रहता था। पदच्युत शोगनके तरफदार राजे महाराजे भी उसके पास ओसाका हीमें रहते थे। शोगनके तरफदार नरेशोंको प्रबन्धकारिणी सभाका सङ्गठित होना बुरा जान पड़ा। उन लोगोंने प्रकाश्यरूपसे सभाका विरोध करना स्थिर किया। पद-च्युत शोगन हितोत्सुवाशी समझता था, कि इस

तरहके विरोधसे खूनखराबी होगी। इस वजह उसने अपने तरफदार राजोंको समझा बुझाकर उन्हें प्रबन्धकारिणी सभासे सन्तुष्ट होनेकी सलाह दी। इसी समय धोगनने विदेशी शक्तियोंके कान्सलोंको श्रोसाकामें बुलाया। उनसे प्रबन्धकारिणी सभाके नरेशों और अपने तरफदार नरेशोंसे वैमनस्य होनेका हाल कहा। साथ ही यह भी कहा, कि आप लोगोंको चिन्तित न होना चाहिये। मैं आप लोगोंके स्वत्वकी रक्षा करूंगा। विदेशी शक्तियोंके [illegible] श्रोसाकासे लौटकर अपनी अपनी [illegible] इस समाचारकी सूचना दी और [illegible] सम्राट् दल या पराजय [illegible] साथ रणविचार और गोला बारूद [illegible] चाहिये।

भरे । कहा, कि आप राजधानीमें जानेपर गिरफ्तार कर लिये जावेंगे । इस कारण राजधानीमें ससैन्य जाना मुनासिव है । हितोत्सू १० हजार सिपाहियोंको साथ लेकर जापान-सम्राट्की निमन्त्रणरक्षा करने चला । जापान सम्राट्को हितोत्सूके साथके बहुसंख्यक सिपाहियोंसे भय जान पड़ा । उन्होंने महाराज चोशू और सत्सुमाको १५ सौ सिपाहियोंके साथ शोगनका राजधानी प्रवेश रोकनेके लिये रवाना किया । दोनो महाराजोंकी फौजें विलायती युद्धशिक्षासे अभिज्ञ थीं—विलायती आग्नेय-अस्त्रोंसे सुसज्जित थीं । ओसाका और क्यूटोके बीचकी राहपर हितोत्सू और महाराजोंकी फौजोंसे मुकावला हुआ । सन् १८६८ ई० को २८ वीं, २९ वीं और ३० वी जनवरीतक दोनो ओरकी फौजें लड़ीं । महाराजोंकी सुशिक्षित सैन्यने पदच्युत शोगनके अशिक्षित, किन्तु बहुसंख्यक सिपाहियोंको परास्त किया । पदच्युत शोगन हितोत्सू हृदयभग्न होकर भागा । ओसाकेमें भी नहीं ठहरा । एक ष्टीमरपर सवार होकर यड्डोकी तरफ रवाना हुआ ।

ष्टीमरपर एक दुर्घटना हुई । हितोत्सूके एक

सरदारने हितोतस्को आत्महत्या कर लेनेकी सलाह दी। हितोत्सने उसकी सलाह नामञ्जूर की। इसपर उस सरदारने हितोतस्के सामने स्वयं आत्महत्या कर ली। अन्तमें हितोत्स् यदो पहुंचा। यदोमें खूब अशान्ति फैली हुई थी। विदेशियोंके पक्षपाती और विरोधी दल परस्पर लड मर रहे थे। हितोत्स्के यदो पहुंचनेके कुछ ही दिनों बाद जापान-सम्राट की फौजें यदोमें पहुंचीं। फौजके सरदारने

इसी किलेमें रहने लगा। इसी किलेमें हितोत्सुका स्वर्गवास हुआ। हितोत्सुके स्वर्गवासके साथ साथ जापानका अन्तिम शोगन और शोगन इयासूके घरानेका अन्तिम प्रधान पुरुष सदैव सदैवके निमित्त संसारसे मिट गया।

पदच्युत शोगन शाही आज्ञा शिरोधार्य्य करके यडोसे चला गया। किन्तु शोगनकी स्थलसेना और नौ-सेनाने जापान-सम्राट्‌की अधीनता स्वीकार नहीं की। पदच्युत शोगनकी प्रबल पराक्रान्त फौजें महाराज एजूकी अधीनतामें यडोके आसपास रहकर महीनोंतक समय समयपर शाही फौजसे खण्डयुद्ध करती रहीं। अन्तमें पदच्युत शोगनकी सैन्यका बल तोडनेके लिये बहुत बड़ी शाही फौजने उसपर चढ़ाई की। सन् १८६८ ई० की ४ थी जुलाईको उइनोके मन्दिरके समीप शाही और बागी फौजोंमें घोर युद्ध हुआ। इस युद्धमे उइनोका मन्दिर नष्ट हुआ। अन्तमे बागी फौजें भागीं और वाकामतसुदुर्गमे घुसकर किलाबन्द हो गई। शाही फौजोने किला घेर लिया। कुछ दिनोंके घिरावके उपरान्त महाराज एजूने बागी फौजोंका समस्त अपराध अपने

माथेपर लेकर शाही फौजके हाथ अपना आत्मसमर्पण कर दिया। इसके बाद बागी फौजोंने भी शाही फौजोंके सामने हथियार डाल दिये। जापान सम्राट्ने बागी फौज और महाराज एजू सबका अपराध क्षमा कर दिया।

यह हुआ पदच्युत शोगनके स्थलसैन्यका परिणाम। अब जलसैन्यका हाल सुनिये। पदच्युत शोगनके जङ्गी जहाज यडोकी शिनागावा नामक गोदीमें खड़े थे। इन जहाजोंपर कुल ८३ तोपें चढ़ी थीं। इन जहाजोंके दो प्रधान नौ-सेनापति थे। एकका नाम था एनामोटो और दूसरेका [illegible]। एनामोटो युरोपके हालैण्ड देशमें नौ-युद्ध की शिक्षा-ग्रहण कर आया था। दोनों नौ-सेनापतियोंने जापान सम्राट्की अधीनता स्वीकार [illegible] [illegible] इन्हें शाही नौ-सेनाके हाथ [illegible] कर देनेकी आज्ञा दी गई। [illegible] अपने जहाजोंको [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

बागी जङ्गी जहाजोंमें लड़ाई हुई। सन् १८६९ ई० तक लड़ाई चलती रही। अन्तमें बागी नौ-सेनाके प्रधान नौ-सेनापतियों—इनामोटो और मतसूने सब अपराधका भागी अपनेको बनाकर सरकारी नौ-सेनाको आत्मसमर्पण कर दिया। दोनो बागी नौ-सेनापति गिरफ़तार किये जाकर यड्डोमें पहुंचाये गये। जापान-सम्राट्‌ने दोनोका अपराध चमा करके उन्हें बन्धनसे अव्याहति दी।

सन् १८६८ ई० की ८वीं फरवरीको जापान-सम्राट्‌ने समस्त विदेशी कन्सलोंके पास एक सूचनापत्र भेजा। उसमें लिखा था, "तुम लोग अपनी अपनी सरकारको सूचित करो, कि भविष्यमें मैं जापान-सम्राज्यका शासन करूंगा और विदेशियोंके मामले भी मेरे हीद्वारा तै किये जावेंगे।" यह सूचनापत्र भेजनेके उपरान्त जापान-सम्राट्‌ने समस्त विदेशी कन्सलोंको राजधानी क्यूटोमें अपनी मुलाक़ातके लिये बुला भेजा। इस समय इस बातके सुननेसे लोगोंको अधिक आश्चर्य्य नहीं हो सकता। आजकल प्रायः सभी विदेशी मनुष्य जापान-सम्राट्‌से मिल सकते हैं— जापान सम्राट्‌की तस्वीरें जगह जगह मिल सकती

हैं। किन्तु सन् १८६८ ई०के पहलेतक किसी विदेशीने कभी जापान-सम्राट्का दर्शन नहीं किया था। और तो क्या,—जापानवासी भी जापान-सम्राट्का दर्शन नहीं पाते थे। सम्राट्के निकटवर्त्ती लोग ही सम्राट्को देख सकते थे। सो उस समय जापान-सम्राट्की विदेशी कान्सलोंसे मुलाकात करनेकी इच्छाका हाल सुनकर विदेशियों और जापानियों दोनोंको हैरान होना पड़ा। सम्राट्का निमन्त्रण पाकर विदेशी कान्सल जापान-राजधानीमें गये। सन् १८६८ ई० की २६ वीं मार्चको डच और फरांसीसी कान्सल जापान सम्राट्के दरबारमें उपस्थित हुए और उन्होंने

सदर सड़कपर रखवा दिया गया। जापान-सम्राट्‌ने अपने उच्च कर्म्मचारियोंको पारकेस साहवके पास भेजकर पूर्व्वोक्त दुर्घटनापर शोक प्रकट कराया। पारकेस साहवको किसी दूसरे दिन दरवारमें वुलाया और उनसे मुलाकात की। इसके उपरान्त जापान-सम्राट्‌ने फर्म्मान जारी किया। उसमें लिखा था,—"जो समुराई विदेशियोंपर आक्रमण करेगा उसका समुराई पद छीन लिया जावेगा—वह आत्महत्या नहीं करने पावेगा—साधारण अपराधियोंकी भांति उसका विचार किया जावेगा।"

सन् १८६८ ई० में महाराज सनसुमाने जापान-सम्राट्‌के सम्मुख एक अपूर्व्व प्रस्ताव उपस्थित किया। प्रस्तावका हाल सुनकर जापान चकित हुआ। प्रस्तावका मर्म्म यह था—"हे सर्व्वशक्ती-श्वर जापानपति! आप देशके राजों महाराजों-पर अपने राज्यकार्य्यका भार न रखिये। प्राचीन जापान-सम्राटोंकी जैसी विलासिता परित्याग करके अपने राज्यकार्य्यका तत्वावधान आप ही कीजिये—राज्यकार्य्यमें परिश्रम कीजिये—प्रजा और राज्यकी उन्नतिमें पराकाष्ठा दिखाइये। आगे, आप अपनी

राजधानी भी बदल डालिये। आपकी वर्त्तमान राजधानी आपके सम्राट् पूर्व्वपुरुषोंका विलासनगर थी। अब आप ओसाकानगरको अपनी राजधानी बनाकर ओसाकाको अपना कार्य्यक्षेत्र बनाइये।" अवश्य ही इस तरहका प्रस्ताव यदि किसी प्राचीन जापान-सम्राट्के सम्मुख उपस्थित किया गया होता, तो प्रस्ताव करनेवालेको प्राणवधका दण्ड दिया जाता या उसको आत्महत्या कर लेनेकी सलाह दी जाती। किन्तु जापान सम्राट् और उनके दरबारी दूसरी ही पाठशालाके छात्र थे। जापान सम्राट्ने प्रस्ताव पसन्द किया और उसे कार्य्यमें परिणत करनेकी चेष्टा की।

जन साधारण सभी शरीक होंगे। इस सभाकी अनुमतिसे जापानका राज्यकार्य्य किया जावेगा।

२—देशके प्रत्येक श्रेणीके मनुष्यको सामाजिक और राजकीय मामलोंपर परामर्श देनेकी स्वतन्त्रता दी जावेगी।

३—देशके प्रत्येक मनुष्यको अच्छा काम करनेमें जापान-सरकार सहायता देगी।

४—प्राचीन समयकी कुत्सित रीतियां रोक दी जावेंगी और सृष्टिके (Nature) जैसा न्याय तथा उसकी जैसी निष्पक्षता हमारे राज्यकार्य्यमें व्यवहृत होगी।

५—जापान साम्राज्यकी प्रतिष्ठा सुदृढ़ करनेके लिये जापान-वासियोंको देशके समस्त भागोंमें जाकर बुद्धि और विद्या सीखना चाहिये।

जापान-सम्राट्के सौगन्ध खानेके कुछ ही दिनों बाद—यानें सन् १८६८ ई० की शीतऋतुमें जापानी डायट सभाकी पहली बैठक राजधानी क्यूटोमें हुई। जापानद्वीप-समूहके प्रत्येक नगरादिके प्रतिनिधि इस डायट सभामें शरीक हुए। बहुसंख्यक सर्व्वोच्च जापानवासी इस सभाके सदस्य बने। सभाकी पहली

बैठकमें जापान-शासन सम्बन्धी नाना विषयोंपर तर्क-वितर्क हुआ। कितनी ही बातोंका खण्डन हुआ, कितनी ही बातोंका मण्डन। सभा अपनी पहली ही बैठकमें होनहार प्रमाणित हुई। इसके उपरान्त सभा नियमानुसार होने और जापानके राजकार्यमें यथेष्ट सहायता पहुंचाने लगी।

इस सभाने जापान-सरकारके ८ विभाग कायम किये। विभागोंके नाम ये हैं —

मौजूद नहीं है। जापानके अनेक प्रधान महाराजोंके मनमें यह विचार उत्पन्न होने लगा, कि सम्पूर्ण जापान-देशपर जापान-सम्राट्का अधिकार हो जाने हीसे जापानदेशका मङ्गल है। जापानके राजों महाराजोंके अधीनस्थ समुराई जातिवालोंके मनमें भी ऐसा ही भाव उत्पन्न हुआ। जिस राज्यके लोभसे समस्त संसारके राजे सहस्र सहस्र प्राणियोंका वध करानेमें सङ्कोच नहीं करते—जिस अधिकार और प्रभुताकी महामायासे अन्धे होकर लोग ईश्वर तुल्य पिता और सुधामयी जननीपर खड्ग हस्त होनेमें कुण्ठित नहीं होते,—जापानी राजे महाराजे, जननी जन्मभूमि जापानके मङ्गलके लिये—स्वजातीय कोटि कोटि जापानी बन्धुओंके हितके लिये—अपने उसी राज्यको तृणवत तुच्छ समझकर उन्हें जापान-सम्राट्के पद्मपरागमें उत्सर्ग कर देनेके लिये उद्यत हुए।

जापानी नरनाथोंने अपनी इस मङ्गल कल्पनाको शीघ्र ही कार्य्यमें परिणत किया। सन् १८६८ ई॰में मत्सुमा, चोशू, इजेन, टोसाकागा इत्यादि इत्यादि सम्मत जापान-नरनाथोंने अपने राज्य जापान सम्राट्को

सेवामें समर्पित किये। इन सब नरपतियोंकी ओरसे जापान-सम्राट्‌को एक प्रार्थनापत्र भेजा गया। एकबार पत्रका भाव देखिये.—"नरनाथ! जिस भूमिपर हमारा निवास है वह श्रीमानकी है। जिस भोजनसे हमारे प्राण हैं वह भोजन,—हे नरपुङ्गव! आपहीकी प्रजाद्वारा उत्पन्न किया जाता है। सो वह भूमि भी हमारी नहीं है—भोजन भी हमारा नहीं है। हम आज अपने राज्य, अपने सुख आदि [illegible]

राज भजकोंने उन्हें ललकारकर कहा,—"भाइयो! महाराजो! सम्राट्‌का राज्य सम्राट्‌को लौटा देनेमें इतस्ततः क्यों करते हो?" इसके उपरान्त ही जापान-सम्राट्‌ने एक फर्म्मान जारी किया। सन् १८६९ ई० की ७ वीं अगष्टको यह फर्म्मान जापानके सरकारी गैजेटमें छपा। फर्म्मानमें लिखा था,—"भविष्यमें सम्पूर्ण जापानी महाराजोंके राज्यपर जापान-सरकार शासन करेगी। जापानी नरेशोंको महाराज वा राजाकी पदवीकी जगह "कुगास्" की सम्मान-सूचक पदवी दी जावेगी।"

पल झपकनेमें कुछका कुछ हो गया। सम्पूर्ण जापानी नरेशोंने अपने राज्य जापान-सम्राट्‌को दे दिये। संसारमें एक अचिन्तनीय काम हो गया। धन्य जापाननरेश! धन्य जापानभूमि! धन्य देश-हितैषिता! धन्य आत्मोत्सर्ग! जापानी नरनाथोंके इस अपूर्व्व कार्य्यसे संसार चौंका—सांसारिक स्तम्भित हुए!

इसके बाद जापानके नरेशगण भिन्न भिन्न प्रदेशोंके गवरनरीके पदपर आरूढ़ किये गये। जो जापानी महाराज अपने पदके अयोग्य समझा जाता था—वह हटाया जाता था। उसकी जगह राज्यका सुयोग्य

मनुष्य संस्थापित किया जाता था। पदत्यागी महाराजोंको जापान-सम्राट् उनके परित्यक्त राज्यकी आयके दशम अंश देने लगे। पदत्यागी महाराजोंके नौकरों और उनके सगुराइयोंको जापान-सरकारने नौकर रख लिया। वयोवृद्ध लोगोंको पेनशनें भी दीं। नये बन्दोबस्तमें खर्च करनेके लिये जापान-सरकारको ३३ करोड़ रुपयेका ऋण लेना पड़ा था।

धानी क्यूटोमें भी तशरीफ ले जाया करते हैं। वह अपने पूर्व्वपुरुषोंकी समाधियोंका दर्शन करते हैं—समाधियोंपर पुष्प चढ़ाते हैं। सन् १८६८ ई० में जापान सम्राट्‌ने क्यूटो जाकर फूजीवारा घरानेकी एक राजकुमारीके साथ विवाह किया। यही राजकुमारी आजकल जापान-सम्राज्ञी हैं।

सम्राट् मत्सुहितोके जमानेमें ईसाईधर्म्मका भी खूब प्रचार हुआ। सन् १८७२ ई० के मार्च महीनेमें जापान-सम्राट्‌ने एक आज्ञा निकाली, कि प्रत्येक जापानवासी इच्छानुसार धर्म्म अवलम्बन कर सकता है। कितने ही जापानी ईसाई भयवश बौद्ध होनेका बहाना करने लगे थे, उन्होंने अपना आवरण उतारकर प्रकृत मूर्त्ति प्रकट की। इस समय जापानमें सहस्र सहस्र जापानी ईसाई भी मौजूद हैं।

अब जापानसाम्राज्यमें नये नये सुधार और नये नये आविष्कार होने लगे। सन् १८७२ ई० में पहले पहल योकोहामासे टोकियोतक रेलगाड़ी खुली। इसी सन्‌में जापान-प्रदेशमें तार भी लगा। सन् १८७५ ई० में जापानने अपना सघेलियन-द्वीप रूसको देकर उससे क्यूराइलद्वीप-समूह ले लिया। सन् १८७६ ई०

में कोरिया और जापानमें छलकासा झगड़ा हो गया। कोरियावासियोंने जापानके एक जहाजपर आक्रमण किया। जापानने सेनापति कुरोडाकी अधीनतामें एक फौज भेजी। कोरियाने जापानसे माफी मांगी। साथ साथ अपने देशमें जापानी व्यापारका फैलना स्वीकार किया। इसके उपरान्त जापानके भिन्न भिन्न प्रदेशमें समय समयपर छोटे छोटे बलवे हो जाते थे जिन्हें जापान-सरकार तत्परतापूर्वक मिटा देती थी।

थे। बागियोंने किला घेर लिया। किलेका पतन हुआ ही चाहता था, कि बागियोंके मुकाबलेके लिये सरकारी सैन्य आ गई। बागियों और सरकारी फौजमें गहरी लड़ाई हुई। बागी हारकर जापानके पूर्व्वीय किनारेकी ओर भागी। सरकारी सैन्यनने उनका पीछा किया और कईवार बागियोंपर आक्रमण भी किया। अन्तमें बागियोंकी फौज नोबीयोका स्थानमें ठहर गई। वहां वह जानकी परवाह न करके सरकारी सैन्यसे लड़ने लगी। बागीसरदार सायगी शेष बागियोंकी प्राणरक्षाके खयालसे २ सौ साथियोंके साथ सरकारी सैन्यको भेदकर कागोशिमाकी ओर भागा। अपनेको बिना सरदार पाकर बागियोंकी फौजने सन् १८७७ ई० की १८ वीं अगष्टको सरकारी फौजके हाथ आत्मसमर्पण किया। उधर सायगी अपने २ सौ आदमियोंसहित कागोशिमाके समीप शिरोयामा पहाड़ीपर सरकारी फौजोंद्वारा घिर गया। सायगीके दुर्द्धर्ष साथियोंने बड़ी मुस्तैदीके साथ सरकारी सैन्यका सामना किया। अन्तमें सन् १८७७ ई० की २४ वीं सितम्बरको यह पहाड़ी सरकारी सैन्यने हस्तगत कर ली। पहाड़ी-

पर सायगो और उसके साथियोंकी लाशें मिलीं। इस प्रकार जापान-सम्राट्को धमकी देनेवाला यह बागीसरदार मारा गया और जापान-सरकार निश्चिन्त हुई।

सन् १८९० ई०में जापानकी डायट सभाकी दूसरी बैठक हुई। इस अवसरमें डायटसभाके लाभसे देशने पूर्ण ज्ञान लाभ कर लिया था। इसके उपरान्त डायट सभा पूर्णतया स्थापित हो गई। इस सभाके बैठने और भङ्ग होनेका समय निर्द्दिष्ट कर दिया गया।

पदपर पराजित कर रहा है। जापानने युद्धविद्यामें उन्नति करनेके साथ साथ सामाजिक और राजनीतिक उन्नतिकी पराकाष्ठा भी दिखा दी है। जुगनूं आज सूर्य्य बन गया है—क्षुद्र जलस्रोत आज समुद्र बन गया है—नन्हीं सी कली आज नन्दन-काननका पारिजात-कुसुम बन गई है। जापानकी इस अपूर्व उन्नतिका कारण क्या है? प्रतिध्वनि कहती है,—स्वदेशभक्ति! श्रम और आत्मत्याग!! इति।

[illegible]